CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Box 2

चन्द्रकान्त झा

सुगम संस्कृत व्याकरण

१

BHARATI BHAWAN (P & D)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नवीन पाठ्यक्रम के आधार पर

सुगम संस्कृत-व्याकरण

(व्याकरण एवं अनुवाद शिक्षा)

[भाग 1: कक्षा 5 एवं 6 के लिए]

चन्द्रकान्त झा, साहित्याचार्य
पूर्वशिक्षक, राज्य-संपोषित उच्च विद्यालय
अलौली (खगड़िया)

भारती भवन
पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकाशक :

भारती भवन (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स)

पटना—ठाकुरबाड़ी रोड, कदमकुआँ, पटना-800 003
राँची—20 जेल रोड (पूर्व), थरपखना, राँची-834 001
नई दिल्ली—4271/3 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
कलकत्ता—10 राजा सुबोध मल्लिक स्क्वेअर, कलकत्ता-700 013
बंगलूर—शंकर बिल्डिंग (फर्स्ट फ्लोर), 36 एवेन्यू रोड, बंगलूर-560 002
मुजफ्फरपुर—पड़ाव पोखर, आमगोला, मुजफ्फरपुर-842 002

© लेखक

पंचदश संस्करण : 1996
पुनःमुद्रण : 2005

इस पुस्तक पर एक 3-D होलोग्रैम स्टिकर लगा है जो साधारण स्टिकरों से भिन्न है। हमारे होलोग्रैम स्टिकर की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं।

- पुस्तक को हिलाने से होलोग्रैम के भीतर की पुस्तक एवं रेखाओं में गति आती है।
- रेखाओं में अतिसूक्ष्म अक्षर अंकित हैं।
- इस होलोग्रैम में भारती भवन का एक बड़ा लोगो छिपा है, साथ ही चार पंक्तियों में BHARATI BHAWAN लिखा हुआ है। इन्हें किसी विशेष कोण पर देखा जा सकता है।

आशा है, आप होलोग्रैम देखकर भारती भवन की सही पुस्तक की पहचान कर पाएँगे।

सुगम संस्कृत व्याकरण I
बी॰ बी॰ प्रिंटर्स, पटना-800 006 द्वारा मुद्रित

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रवि कान्त शर्मा

आत्मनिवेदन

मध्य विद्यालयों में संस्कृत एक प्रमुख विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। किन्तु तदनुरूप संस्कृत-व्याकरण की कोई ऐसी पुस्तक मुझे देखने को नहीं मिली, जो सुकुमार-मति बालकों को संस्कृत का प्रारम्भिक ज्ञान सुगमतापूर्वक करा सके।

प्रस्तुत पुस्तक की रचना इसी उद्देश्य से मध्य कक्षाओं के छात्रों के लिए नवीन पाठ्यक्रम के आधार पर की गई है। इसमें व्याकरण के साथ-साथ अनुवाद पर भी पूरा ध्यान रखा गया है तथा प्रत्येक विषय को सरल ढंग से समझाने की चेष्टा की गई है, ताकि छात्रों को अपेक्षित विषयों की जानकारी आसानी से प्राप्त हो सके।

इसमें पाठ्यक्रम के अतिरिक्त कुछ अन्य विषय भी दिए गए हैं, जिनमें धातुओं के लोट् लकार (अनुज्ञा) के रूप भी शामिल हैं। पाठ्यक्रम में केवल लट् (वर्तमानकाल), लङ् (भूतकाल) तथा लृट् (भविष्यत्काल) लकारों का ही उल्लेख है।

पुस्तक के अंत में व्यवहार में आनेवाले कुछ आवश्यक क्रिया-पद, शब्दकोश, अनुवाद के लिए हिन्दी गद्यांश, कुछ वस्तुनिष्ठ प्रश्न इत्यादि देकर पुस्तक को उपयोगी बनाने की भरपूर कोशिश की गई है।

अधिक क्या कहा जाए, यदि इससे छात्र-समुदाय को थोड़ा भी लाभ मिल सका तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूँगा।

आशा है, सुधी पाठक इस पुस्तक के विषय में अपना बहुमूल्य सुझाव देकर मुझे अवश्य अनुगृहीत करेंगे।

चन्द्रकान्त झा 'नवेन्दु'

नाम
रवि कान्त शर्मा
रवि कान्त शर्मा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रविकान्त शर्मा

पाठ्यक्रम

वर्ग—5

1. **सुबन्त**

प्रातिपदिक—ह्रस्व अकारान्त पुँल्लिग—देव, बालक आदि;
ह्रस्व इकारान्त पुँल्लिग—मुनि; आकारान्त स्त्रीलिंग—लता

2. **तिङन्त**

धातु—व्यञ्जनान्त सेट्
भ्वादिगणीय परस्मैपद—भू, पठ्, वद्, हस्, खाद्, खेल् इत्यादि—
केवल वर्तमानकाल, लट् लकार

3. **अनुवाद**

संस्कृत में छोटे वाक्यों का निर्माण करना, संस्कृत के सरल वाक्यों का मातृभाषा में अनुवाद करना तथा मातृभाषा के सरल वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करना

वर्ग—6

1. **सुबन्त**

ह्रस्व अकारान्त पुँल्लिग—देव, बालक
ह्रस्व इकारान्त पुँल्लिग—मुनि
ह्रस्व उकारान्त पुँल्लिग—साधु
ऋकारान्त पुँल्लिग—दातृ
आकारान्त स्त्रीलिंग—लता, ह्रस्व अकारान्त नपुं॰ फल
सर्वनाम—युष्मद्, अस्मद्, तद्, सर्व (केवल पुँल्लिग)

2. **धातु-रूप**

भ्वादिगणीय परस्मैपद—पठ्, भू, पत्, खाद्, वद्, अस्, गम्, लिख्, खेल्, हस्, स्था इत्यादि—केवल लट्, लृट् और लङ् लकार में

3. **सन्धि**

स्वर सन्धि

4. **अव्यय**

यत्र, तत्र, कुत्र, अत्र, सर्वत्र, यदा, तदा, सर्वदा, सम्प्रति, कदा, वा, अपि, एव

5. **संस्कृत में वाक्य-रचना**

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शशिकान्त शर्मा

विषय-सूची

1. वर्ण-विचार	1
वर्ण	1
2. संधि-प्रकरण	3
स्वर संधि	3
व्यञ्जन संधि	5
विसर्ग संधि	6
3. पद-प्रकरण	8
विभक्ति	8
वचन	8
लिंग	9
4. शब्द-रूप	11
'सुप्' विभक्ति	11
संज्ञा शब्द	11
सर्वनाम	17
संख्यावाचक शब्द	21
पूरणार्थक संख्या	22
5. कारक	23
कर्ताकारक, कर्मकारक, करणकारक	23
सम्प्रदानकारक, अपादानकारक, सम्बन्ध, अधिकरणकारक	24
6. विशेषण	26
7. अव्यय	29
8. स्त्री-प्रत्यय	30
9. तिङन्त-प्रकरण	32
सकर्मक और अकर्मक, पुरुष, काल	32
परस्मैपद एवं आत्मनेपद	33
10. अनुवाद के कुछ सामान्य नियम	36
11. धातु-रूप	40
व्यवहार में आनेवाले कुछ धातुओं के सांकेतिक रूप	42

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ परिवर्तनीय धातु	•	45
धातुकोश	•	49
12. वाक्य-रचना	•	51
13. निमित्तार्थक 'मुमुन्' प्रत्यय	•	55
14. असमापिका क्रिया	•	56
क्त्वा और ल्यप् प्रत्यय	•	56
15. भूतकालिक 'स्म' अव्यय	•	57
परिशिष्ट 1. संस्कृत में कुछ अनुच्छेद	•	58
परिशिष्ट 2. अनुवाद के लिए कुछ संस्कृत गद्यांश	•	60
परिशिष्ट 3. अनुवाद के लिए कुछ हिन्दी गद्यांश	•	62
परिशिष्ट 4. शब्दकोश	•	64

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रवि कान्त शर्मा

— 1. वर्ण-विचार —

किसी भी भाषा को समझने के लिए तथा शुद्ध-शुद्ध लिखने और बोलने के लिए व्याकरण की आवश्यकता होती है। वस्तुतः, बिना व्याकरण के किसी भी भाषा को समझना आसान काम नहीं है। प्रत्येक भाषा अपने-अपने व्याकरण के नियमों से बँधी होती है। संस्कृत भाषा का भी अपना व्याकरण है और यह व्याकरण अत्यन्त समृद्ध है।

वर्ण

भाषा की वह छोटी इकाई जिसका खण्ड नहीं हो सके, उसे वर्ण या अक्षर कहते हैं। वर्ण के दो प्रकार होते हैं—स्वर और व्यञ्जन।

स्वर वर्ण

स्वर वर्ण के उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की मदद नहीं ली जाती है। इनकी संख्या 13 है—

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ

व्यञ्जन वर्ण

जिस वर्ण का उच्चारण स्वर की सहायता से हो, उसे व्यंजन वर्ण कहते हैं। व्यंजन वर्ण की संख्या 33 है—

क ख ग घ ङ	—	क वर्ग
च छ ज झ ञ	—	च वर्ग
ट ठ ड ढ ण	—	ट वर्ग
त थ द ध न	—	त वर्ग
प फ ब भ म	—	प वर्ग
य र ल व	—	अन्तःस्थ
श ष स ह	—	ऊष्म

स्पर्श वर्ण—क से लेकर म तक के वर्णों को स्पर्श वर्ण कहते हैं।

अन्तःस्थ—य, र, ल और व को अन्तःस्थ वर्ण कहते हैं।

ऊष्म—श, ष, स, ह—ये चार ऊष्म वर्ण कहलाते हैं।

ह्रस्व—ह्रस्व वर्ण के उच्चारण में बहुत कम समय लगता है। अ, इ, उ, ऋ और ऌ ये पाँच ह्रस्व कहलाते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दीर्घ—दीर्घ स्वर के उच्चारण में ह्रस्व से कुछ अधिक समय लगाना पड़ता है। आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ और औ—ये आठ दीर्घ स्वर कहलाते हैं।

प्लुत—प्लुत स्वर के उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक जोर और समय लगाना पड़ता है। इसका प्रयोग किसी को जोर से पुकारने वगैरह में होता है। जैसे—हे राम!

नोट—अनुस्वार (ं) और विसर्ग (:) वर्णों के अन्तर्गत नहीं रहने पर भी वर्ण की तरह कार्य करते हैं।

—— अभ्यास ——

1. निम्नलिखित वर्णों से ह्रस्व और दीर्घ वर्णों को अलग-अलग लिखें।
   आ, ए, औ, इ, ऋ, ऊ
2. स्पर्श वर्ण किसे कहते हैं?
3. ऊष्म वर्ण कौन-कौन हैं?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

— 2. सन्धि-प्रकरण —

दो वर्णों के संयोग से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे सन्धि कहते हैं। सन्धि तीन प्रकार की होती है—स्वर सन्धि, व्यञ्जन सन्धि और विसर्ग सन्धि।

स्वर सन्धि

स्वर के साथ स्वर की जो सन्धि होती है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं।
जैसे—हिम + आलयः = हिमालयः, गण + ईशः = गणेशः

इसके पाँच भेद होते हैं—दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण् और अयादि।

(1) दीर्घ सन्धि—दो समान स्वर (ह्रस्व या दीर्घ) वर्णों में दीघ सन्धि होती है। यथा—

अ + अ = आ—मुर + अरिः = मुरारिः
अ + आ = आ—देव + आलयः = देवालयः
आ + अ = आ—विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
आ + आ = आ—विद्या + आलयः = विद्यालयः
इ + इ = ई—कवि + इन्द्रः = कवीन्द्रः
इ + ई = ई—गिरि + ईशः = गिरीशः
ई + इ = ई—मही + इन्द्रः = महीन्द्रः
ई + ई = ई—श्री + ईशः = श्रीशः
उ + उ = ऊ—भानु + उदयः = भानूदयः
उ + ऊ = ऊ—लघु + ऊर्मिः = लघूर्मिः
ऊ + उ = ऊ—भू + उन्नतिः = भून्नतिः
ऊ + ऊ = ऊ—वधू + ऊहनम् = वधूहनम्

(2) गुण सन्धि—अ या आ के बाद इ, ई, उ, ऊ, ऋ या ॠ आए तो अ + इ मिलकर ए, अ + उ मिलकर ओ और अ + ऋ मिलकर अर् हो जाते हैं। इन्हें गुण सन्धि कहते हैं। जैसे—

अ + इ = ए—खग + इन्द्रः = खगेन्द्रः
आ + ई = ए—सुर + ईशः = सुरेशः
आ + इ = ए—रमा + इन्द्रः = रमेन्द्रः
आ + ई = ए—गंगा + ईशः = गंगेशः
अ + उ = ओ—अरुण + उदयः = अरुणोदयः
आ + उ = ओ—महा + उदयः = महोदयः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आ + ऊ = ओ—महा + ऊर्मि: = महोर्मि:
अ + ऋ = अर्—देव + ऋषि: = देवर्षि:
आ + ऋ = अर्—महा + ऋषि: = महर्षि:

(3) **वृद्धि सन्धि**—अ या आ के बाद ए, ऐ, ओ या औ हो तो अ या आ + ए या ऐ = ऐ, अ या आ + ओ या औ = औ हो जाता है। ये वृद्धि सन्धि होते हैं। जैसे—

अ + ए = ऐ—अद्य + एव = अद्यैव
अ + ऐ = ऐ—परम + ऐश्वर्यम् = परमैश्वर्यम्
आ + ए = ऐ—तदा + एव = तदैव
आ + ऐ = ऐ—महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम्
अ + ओ = औ—सूप + ओदनम् = सूपौदनम्
अ + औ = औ—चित्त + औदार्यम् = चित्तौदार्यम्
आ + ओ = औ—गंगा + ओघ: = गंगौघ:
आ + औ = औ—महा + औषधम् = महौषधम्

(4) **यण् सन्धि**—ह्रस्व या दीर्घ इ, उ या ऋ के आगे कोई अन्य स्वर आए तो इ और ई के बदले य्, उ और ऊ के बदले व् और ऋ के बदले र् हो जाता है। इन्हें ही यण् सन्धि कहते हैं। जैसे—

यदि + अपि = यद्यपि	मनु + अन्तरम् = मन्वन्तरम्
प्रति + एकम् = प्रत्येकम्	वधू + आदि: = वध्वादि:
अनु + एषणम् = अन्वेषणम्	मातृ + अर्थ: = मात्रर्थ:

(5) **अयादि सन्धि**—यदि ए, ऐ, ओ और औ के आगे स्वर वर्ण आए तो ए का अय्, ऐ का आय्, ओ का अव् और औ का आव् हो जाता है। ये ही अयादि सन्धि हैं। जैसे—

ने + अनम् = नयनम्
गै + अक: = गायक:
पो + इत्र: = पवित्र:
पौ + अक: = पावक:

—— अभ्यास ——

1. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद करें।
   देवालय:, कपीश:, इत्यादि:, महोत्सव:, रमेश:, नायक:

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि करें।
   प्रति + उपकार:, सर्व + उदय:, सदा + एव, पितृ + आदेश:, भौ + अक:, नदी + अम्बु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यञ्जन सन्धि

स्वर या व्यञ्जन वर्ण के साथ व्यञ्जन का विकार होकर जो सन्धि होती है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं। जैसे—दिक् + अम्बरः = दिगम्बरः।

(1) यदि स्वर वर्ण, वर्ग के तृतीय या चतुर्थ वर्ण या य, र, ल, व और ह आगे रहें तो पद के अन्तवाले क् का ग्, च् का ज्, त् का द् और प् का ब् हो जाता है। जैसे—

वाक् + जालम् = वाग्जालम्
अच् + अन्तः = अजन्तः
जगत् + ईश्वरः = जगदीश्वरः
अप् + जः = अब्जः

(2) यदि लकार आगे रहे तो पद के अन्तवाले त् और द् के स्थान में ल् हो जाता है। जैसे—

तद् + लीनः = तल्लीनः
उत् + लेखः = उल्लेखः

(3) यदि च् या छ् आगे रहे तो पदान्त त् और द् के स्थान में च् और यदि ज या झ आगे रहे तो त् और द् के स्थान में ज् हो जाता है। जैसे—

उत् + चारणम् = उच्चारणम्
एतद् + छाया = एतच्छाया
उत् + ज्वलः = उज्ज्वलः
तत् + झङ्कारः = तज्झङ्कारः

(4) यदि वर्गों के प्रथम वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) के आगे न् या म् रहे तो प्रथम वर्ण के स्थान में तीसरा या पाँचवाँ वर्ण हो जाता है। जैसे—

उदक् + मुखम् = उदङ्मुखम्, उदग्मुखम्
जगत् + माता = जगन्माता, जगद्माता
षट् + नायकाः = षण्णायकाः, षड्नायकाः
षट् + नवतिः = षण्णवतिः
उत् + मत्तः = उन्मत्तः
जगत् + नाथः = जगन्नाथः
अप् + मयम् = अम्मयम्

(5) यदि म् के आगे क् से लेकर ह् तक के वर्ण हों तो म् का अनुस्वार हो जाता है। जैसे—

सम् + सारः = संसारः
सम् + हारः = संहारः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मृत्युम् + जयः = मृत्युंजयः
सम् + कल्पः = संकल्पः

—— अभ्यास ——

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि करें।
वाक् + ईशः, सत् + जनः, किम् + मयम्, तत् + लयः, किम् + कर

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद करें।
वाग्जालम्, जगन्नाथः, संसारः, दिगम्बरः, उच्चारणम्, तल्लीनः

विसर्ग सन्धि

जब विसर्ग का स्वर या व्यञ्जन वर्ण के साथ संयोग होने पर कोई विकार होता है तब उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं। जैसे—दुः + गतिः = दुर्गतिः, पयः + दः = पयोदः।

(1) यदि विसर्ग के आगे च् या छ् रहे तो विसर्ग का श् और त् या थ् हो तो स् हो जाता है। जैसे—

पूर्णः + चन्द्रः = पूर्णश्चन्द्रः
तरोः + छाया: = तरोश्छाया
दुः + तरः = दुस्तरः

(2) पदान्त विसर्ग के पहले अ हो और आगे वर्गों का तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण अथवा अ, य, र, ल, व, ह हो तो अकार-सहित विसर्ग का ओ हो जाता है। जैसे—

सः + अहम् = सोऽहम्
मनः + रथः = मनोरथः
शीतः + वायुः = शीतोवायुः
मनः + हरः = मनोहरः

(3) यदि अकार के बाद र् से उत्पन्न विसर्ग हो तो विसर्ग का र् हो जाता है। जैसे—

पुनः + अपि = पुनरपि
प्रातः + एव = प्रातरेव
स्वः + गतः = स्वर्गतः

(4) यदि र् से उत्पन्न विसर्ग के आगे र् रहे तो विसर्ग का लोप हो जाता है और विसर्ग से पूर्व स्वर का दीर्घ हो जाता है। जैसे—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निः + रोगः = नीरोगः
निः + रसः = नीरसः

(5) विसर्ग के पहले अ, आ को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो और उसके आगे स्वर वर्ण, वर्गों के तृतीय, चतुर्थ और पंचम वर्ण या य, र, ल, व, ह हों तो विसर्ग का र् हो जाता है। जैसे—

निः + धनः = निर्धनः   निः + आधारः = निराधारः
दुः + गतिः = दुर्गतिः   कविः + अयम् = कविरयम्

(6) यदि विसर्ग के बाद क या प हो तो विसर्ग का विसर्ग ही रह जाता है। जैसे—

अन्तः + करणम् = अन्तःकरणम्
मनः + पूतम् = मनःपूतम्

(7) यदि इकार या उकार के बाद विसर्ग हो और उसके आगे क, ख, प या फ हो तो विसर्ग की जगह ष् हो जाता है। जैसे—

निः + कारणम् = निष्कारणम्
निः + पापः = निष्पापः
दुः + फलम् = दुष्फलम्

—— अभ्यास ——

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद करें।
   दुर्जनः, कोऽयम्, मनोहरः, दुर्गतिः, नीरसः, अन्तःकरणम्
2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि करें।
   निः + आधारः, मनः + जः, प्रातः + एव, निः + फलम्, पूर्णः + चन्द्रः
3. नीचे लिखे सन्धि-विच्छेदों में जो शुद्ध हों, उन्हें अलग लिखें।
   महेन्द्रः—मह + इन्द्रः, महा + इन्द्रः । सूर्योदयः—सूर्य + दयः, सूर्य + उदयः।
   महर्षिः—महा + ऋषिः, मह + र्षिः। यद्यपि—यदी + अपि, यदि + अपि।
   नयनम्—नय + अनं, ने + अनम्। दिगम्बरः—दिग् + अम्बरः, दिक् + अम्बरः।
   कोऽयम्—को + यम्, कः + अयम्।
4. स्वर संधि किसे कहते हैं?
5. विसर्ग सन्धि के तीन उदाहरण दें।
6. निम्नलिखित शब्दों की सन्धि बताएँ।
   पावकः, प्रातरेव, जगन्नाथः, निर्धनः, उल्लेखः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. पद-प्रकरण

संस्कृत में विभक्ति से रहित शब्दों का प्रयोग नहीं होता है। 'सुप्' विभक्ति से युक्त शब्दों को सुबन्त पद तथा 'तिङ्' विभक्ति से युक्त धातुओं को तिङन्त पद कहते हैं। संस्कृत में इन्हीं पदों का प्रयोग होता है।

सुबन्त पद, यथा—देवः, देवम्, मुनयः, नद्यौ, फलम् इत्यादि
तिङन्त पद, यथा—भवति, अभवत्, पठसि, गच्छतु इत्यादि

विभक्ति

शब्दों के आगे कर्ता आदि कारकों में प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी—ये सात विभक्तियाँ लगती हैं। सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। प्रत्येक विभक्ति में तीन-तीन वचन (एकवचन, द्विवचन, बहुवचन) होते हैं।

वचन

जिससे संख्या का बोध हो उसे वचन कहते हैं। संस्कृत में तीन वचन होते हैं—एकवचन, द्विवचन और बहुवचन।

एकवचन

जिससे एक का बोध हो उसे एकवचन कहते हैं। जैसे—

बालकः = एक लड़का (पुँल्लिग)
लता = एक लता (स्त्रीलिंग)
पत्रम् = एक पत्ता (नपुंसकलिंग)

'एक लड़का जाता है'—इसका अनुवाद 'एकः बालकः गच्छति' होगा। 'एक' नहीं कहकर केवल 'बालकः गच्छति' कहने से भी 'एक लड़का जाता है' ऐसा बोध होगा; क्योंकि 'बालकः' कर्ताकारक के एकवचन का रूप है, जिसका स्वतः अर्थ 'एक लड़का' होता है।

द्विवचन

जिससे दो का बोध हो उसे द्विवचन कहते हैं। जैसे—

बालकौ = दो लड़के (पुं॰)
लते = दो लताएँ (स्त्री॰)
पत्रे = दो पत्ते (नपुं॰)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यहाँ बालक, लता तथा पत्र शब्द के द्विवचन के रूप दिए गए हैं। हिन्दी में द्विवचन नहीं होता, इसलिए हिन्दी में 'दो' का बोध कराने के लिए वाक्य में स्पष्ट रूप से 'दो' शब्द का प्रयोग किया जाता है। जैसे—ऊपर दो लड़के, दो लताएँ आदि शब्द आए हैं। केवल लड़के या लताएँ कहने से बहुवचन का बोध होता है।

बहुवचन

जिससे दो से अधिक का बोध हो उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे—

बालकाः = कई लड़के (पुं॰)
लताः = कई लताएँ (स्त्री॰)
पत्राणि = कई पत्ते (नपुं॰)

ऊपर बालक, लता तथा पत्र शब्द के बहुवचन के रूप दिए गए हैं। 'बालकाः' कहने से दो से अधिक लड़कों का बोध होता है। इसी तरह, 'लताः' से दो से अधिक लताओं का तथा 'पत्राणि' से दो से अधिक पत्तों का बोध होता है।

लिंग

शब्दों के लिंग का विचार भी आवश्यक होता है। लिंग तीन होते हैं—पुँल्लिग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग।

पुँल्लिग

जिसमें पुरुषवाची अर्थ या प्रत्यय होता है, वह शब्द पुँल्लिग होता है; जैसे—रामः, हरिणः, दीपः आदि। पुँल्लिग शब्दों में सुप् विभक्ति के लगने पर रूप भिन्न हो जाते हैं। जैसे—रामे, दीपस्य, हरिणा।

स्त्रीलिंग

जो शब्द स्त्रीवाची होते हैं या जिनमें आ, ई, ति आदि प्रत्यय लगते हैं, वे स्त्रीलिंग होते हैं। इनमें भी सुप् विभक्ति के लगने पर रूप भिन्न हो जाते हैं। जैसे—रमा, नदी, मतिः, नद्या, मत्या, रमायाम्।

नपुंसकलिंग

जिन शब्दों में पुरुष या स्त्री का भेद नहीं होता है, या उस प्रकार का प्रत्यय नहीं लगा होता है, वे नपुंसकलिंग होते हैं; ऐसे शब्द प्रायः निर्जीव, फल, स्थान या अंग से संबद्ध होते हैं। यथा—आम्रम्, फलम्, दधि, मुखम् आदि। नपुंसकलिंग में अकारान्त, मकारान्त, इकारान्त, उकारान्त आदि शब्द प्रथमा एकवचन में बिना किसी विकार के प्रयोग में आते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

—— अभ्यास ——

1. वचन किसे कहते हैं?
2. संस्कृत में वचन के कितने भेद हैं?
3. उदाहरण-सहित द्विवचन का अर्थ स्पष्ट करें।
4. नपुंसक लिंग किसे कहते हैं?
5. सुबन्त पद किसे कहते हैं?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. शब्द-रूप

'सुप्' विभक्ति

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सु (स्)	औ	जस् (अ:)
द्वितीया	अम्	औट् (औ)	शस् (अ:)
तृतीया	टा (आ)	भ्याम्	भिस् (भि:)
चतुर्थी	ङे (ए)	भ्याम्	भ्यस् (भ्य:)
पञ्चमी	ङसि (अ:)	भ्याम्	भ्यस् (भ्य:)
षष्ठी	ङस् (अ:)	ओस् (ओ:)	आम्
सप्तमी	ङि (इ)	ओस् (ओ:)	सुप् (सु)

सम्बोधन में प्रथमा के समान ही रूप होते हैं, केवल एकवचन में रूप कुछ बदल जाता है। नीचे इन विभक्तियों से बने शब्दों के रूप दिए जाते हैं।

संज्ञा शब्द

अकारान्त पुँल्लिग 'देव' शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	देव: (देव, देव ने)	देवौ (दो देव, दो देवों ने)	देवा: (अनेक देव, देवों ने)
द्वितीया	देवम् (देव को)	देवौ (दो देवों को)	देवान् (अनेक देवों को)
तृतीया	देवेन (देव से, द्वारा)	देवाभ्याम् (दो देवों से)	देवै: (देवों से)
चतुर्थी	देवाय (देव के लिए, को)	देवाभ्याम् (दो देवों के लिए, को)	देवेभ्य: (देवों के लिए, को)
पञ्चमी	देवात्, देवाद् (देव से)	देवाभ्याम् (दो देवों से)	देवेभ्य: (देवों से)
षष्ठी	देवस्य (देव का, के, की)	देवयो: (दो देवों का, के, की)	देवानाम् (देवों का, के, की)
सप्तमी	देवे (देव में, पर)	देवयो: (दो देवों में, पर)	देवेषु (देवों में, पर)
सम्बोधन	देव (हे देव!)	देवौ (हे दो देवो!)	देवा: (हे देवो!)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नृप, बालक, गज, राम, कृष्ण, वृक्ष, विद्यालय, ग्राम, तडाग (तालाब), बाण, मृग, अश्व, सर्प, शकट (गाड़ी), दर्पण, दीप, छाग (बकरा), कूप (कुआँ), चाप (धनुष), सूर्य, चन्द्र इत्यादि सभी अकारान्त पुँल्लिग शब्दों के रूप 'देव' के समान होते हैं। कहीं-कहीं न् का ण् और स् का ष् हो जाता है।

'बालक' (लड़का), अकारान्त पुँल्लिग

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	बालकः	बालकौ	बालकाः
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
पंचमी	बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
षष्ठी	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयोः	बालकेषु
संवोधन	बालक	बालकौ	बालकाः

पुँल्लिग इकारान्त 'मुनि' शब्द

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पंचमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
संबोधन	मुने	मुनी	मुनयः

सखि और पति शब्द को छोड़कर शेष हरि, कवि, अग्नि, रवि, ऋषि, गिरि, मणि, यति, व्याधि, अरि, निधि, विधि, पाणि इत्यादि सभी इकारान्त पुँल्लिग शब्दों के रूप 'मुनि' के समान होते हैं।

इकारान्त पुँल्लिंग 'पति' (स्वामी) शब्द

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पंचमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	पते	पती	पतयः

अन्य शब्दों के साथ समास होने पर पति शब्द के रूप भी मुनि शब्द के समान होते हैं। यथा—धनपति, भूपति, सेनापति इत्यादि।

पुँल्लिग उकारान्त 'साधु' शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	साधुः	साधू	साधवः
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
पंचमी	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
षष्ठी	साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
सप्तमी	साधौ	साध्वोः	साधुषु
सम्बोधन	साधो	साधू	साधवः

गुरु, भानु, विधु, तरु, मृत्यु. प्रभु, विष्णु, सेतु (पुल), ऋतु, पशु, शिशु, शत्रु इत्यादि सभी उकारान्त पुँल्लिग शब्दों के रूप साधु शब्द के समान होते हैं।

आकारान्त स्त्रीलिंग 'लता' शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पंचमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	लते	लते	लताः

बालिका, रमा, कन्या, गंगा, यमुना, सभा, आशा, माया, दया, आज्ञा इत्यादि सभी आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप 'लता' के समान होते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इकारान्त 'मति' शब्द (स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पंचमी	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	मते	मती	मतयः

उन्नति, गति, भक्ति, शक्ति, युक्ति, जाति, रीति, नीति, धूलि, कान्ति, कीर्ति, स्मृति, बुद्धि, रात्रि, शान्ति, वृद्धि, हानि, भूमि, मूर्ति इत्यादि सभी इकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप 'मति' के समान होते हैं।

ईकारान्त 'नदी' शब्द (स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पंचमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	नदि	नद्यौ	नद्यः

नारी, गौरी, देवी, युवती, वाणी, जननी, दासी, गोपी, नगरी, रजनी, राज्ञी (रानी) इत्यादि ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप 'नदी' के समान होते हैं।

मातृ (माता)—ऋकारांत स्त्रीलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातृः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पंचमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातृणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
संबोधन	मातः	मातरौ	मातरः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दातृ (दानी)—पुँल्लिग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दाता	दातारौ	दातारः
द्वितीया	दातारम्	दातारौ	दातृन्
तृतीया	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
चतुर्थी	दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पंचमी	दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
षष्ठी	दातुः	दात्रोः	दातृणाम्
सप्तमी	दातरि	दात्रोः	दातृषु
संबोधन	दातः	दातारौ	दातारः

पितृ, भ्रातृ आदि कुछ शब्दों को छोड़कर नेतृ (नेता), श्रोतृ (सुननेवाला), कर्तृ (करनेवाला), हंतृ (मारनेवाला) आदि ऋकारांत पुँल्लिग शब्दों के रूप 'दातृ' के समान होते हैं।

ऋकारान्त पुँल्लिंग 'पितृ' (पिता) शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितृन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितृणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	पितः	पितरौ	पितरः

भ्रातृ, जामातृ आदि शब्दों के रूप 'पितृ' के समान चलते हैं।

अनुवाद

राम लिखता है—रामः लिखति।
राधा पढ़ती है—राधा पठति।
श्याम खाता है—श्यामः खादति।
मोहन नहीं पढ़ता है—मोहनः न पठति। मोहनः नहि पठति।
कुआँ है—कूपः अस्ति।
लड़का खेलता है—बालकः खेलति।
चिड़िया चहकती है—खगः कूजति।
पहाड़ नहीं चलता है—पर्वतः न चलति।
सुधीर टहलता है—सुधीरः भ्रमति।
नदी गरजती है—नदी गर्जति।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुरेश राधा का पति है—सुरेशः राधायाः पतिः अस्ति।
पिता के पास पुस्तक है—पितुः पार्श्वे पुस्तकम् अस्ति।
माता को प्रणाम करना चाहिए—मातरं प्रणमेत्।
दाता के पास जाएँ—दातुः पार्श्वे गछन्तु।

—— अभ्यास ——

क्रिया-संकेत—

गरजता है—गर्जति	पढ़ता है—पठति
लिखता है—लिखति	चलता है—चलति
टहलता है—भ्रमति	गिरता है—पतति
खेलता है—खेलति	चहकता है—कूजति
खाता है—खादति	है—अस्ति

शब्द-संकेत—
मोहन—मोहनः। सीता—सीता। रमेश—रमेशः। नहीं—न, नहि। नाव—नौका। दीया—दीपः। बकरी—अजा। हवा—पवनः। लड़की—बालिका। हाथी—गजः। हरि—हरिः। साधु—साधुः। धूल—धूलिः। फल—फलम्। क्या—किम्! यह—अयम् (पुँल्लिंग)।

1. संस्कृत में अनुवाद करें—
मोहन पढ़ता है। सीता लिखती है। रमेश नहीं लिखता है। नाव चलती है। हवा नहीं चलती है। बकरी चलती है। दीया नहीं है। लड़की खेलती है। हाथी नहीं है। हरि खाता है। साधु पढ़ता है। धूल गिरती है। फल नहीं गिरता है। मुनि क्या पढ़ता है? यह रमा के पति का हाथी है। पिताजी पढ़ते हैं।

2. निम्नलिखित शब्दों की तृतीया, चतुर्थी और षष्ठी विभक्तियों के सभी वचनों में रूप लिखें।
देव, मुनि, लता, नदी, पितृ, दातृ

3. निम्नलिखित शब्दों में जो शुद्ध हों, उनपर चिह्न (✓) लगाएँ।
देवभिः—देवैः। मुनेः—मुनिस्य। साधवेन—साधुना। लतान्—लताः। लतास्य—लतायाः। नदीः—नदीन्। भूपत्या—भूपतिना। पत्युः—पतेः। पितेन—पित्रा। मातुः—मातास्य।

नपुंसकलिंग अकारान्त 'फल' शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	फल	फले	फलानि

मित्र, वन, पुष्प, वचन, वस्त्र, अन्न, मुख, भोजन, धन, स्वर्ण, दुग्ध, घृत, व्यञ्जन (तरकारी), तैल, कमल, उद्यान, इन्धन (जलावन), गृह, बल, रूप, हृदय, अस्त्र, शस्त्र, सुख, दुःख, पाप, पुण्य, चन्दन, नयन, शास्त्र, तट, तीर, पुस्तक, संगीत, मूल्य, मूल (जड़), कुशल, विष, क्षेत्र (खेत), आम्र, पत्र इत्यादि सभी अकारान्त नपुंसक शब्द के रूप 'फल' के समान होते हैं। यथा—मित्रम्, मित्रे, मित्राणि।

सर्वनाम

'युष्मद्' (तू) शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

'अस्मद्' (मैं) शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'तद्' (वह) शब्द (पुँल्लिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

'तद्' (वह) शब्द (स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	तांभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

'तद्' (वह) शब्द (नपुंसकलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

शेष सभी विभक्तियों के रूप पुँल्लिग 'तद्' के समान होंगे। जैसे—तेन, ताभ्याम्, तैः इत्यादि।

'इदम्' (यह) पुँल्लिग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'इदम्' (यह) स्त्रीलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः	आसु

'इदम्' (यह) नपुंसकलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्	इमे	इमानि

शेष रूप पुँल्लिग 'इदम्' के समान होते हैं।

जैसे—अनेन, आभ्याम्, एभिः इत्यादि

'किम्' (कौन) प्रश्नवाचक सर्वनाम, पुँल्लिग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

'किम्' (कौन) स्त्रीलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पंचमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'किम्' (कौन) नपुंसकलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि

शेष रूप पुँल्लिग शब्द के समान होते हैं। यथा—केन, काभ्याम्, कैः इत्यादि।

'सर्व' (सब) सर्वनाम पुँल्लिग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पंचमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु
संबोधन	सर्व	सर्वौ	सर्वे

विश्व, अन्य आदि शब्दों के रूप सर्व शब्द के समान होते हैं। यथा—विश्वः, विश्वौ, विश्वे।

अनुवाद

वह दौड़ता है—सः धावति।
मेघ बरसता है—मेघः वर्षति।
पत्ता गिरता है—पत्रं पतति।
वह क्या लिखती है—सा किं लिखति?
रमा नहीं दौड़ती है—रमा न धावति।
आम फलता है—आम्रम् फलति।
दिनेश कहाँ जाता है—दिनेशः कुत्र गच्छति?
शासक रक्षा करता है—शासकः रक्षति।
गौरी नहीं हँसती है—गौरी न हसति।
दीया जलता है—दीपः ज्वलति।
राधा गाती है—राधा गायति।
यज्ञ होता है—यज्ञः भवति।
यह लड़का पढ़ता है—अयम् बालकः पठति।
यह सबका धन है—इदं सर्वस्य धनं अस्ति।
रमेश किसका भाई है—रमेश कस्य भ्राता अस्ति?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

—— अभ्यास ——

क्रिया-संकेत—

दौड़ता है—धावति	गाता है—गायति	बरसता है—वर्षति
चरता है—चरति	फलता है—फलति	जाता है—गच्छति
जलता है—ज्वलति	हँसता है—हसति	रक्षा करता है—रक्षति
होता है—भवति	जाते हैं—गच्छन्ति	खेलता है—खेलति

शब्द-संकेत—

गाय—गौः। वह (पुँ)—सः। वह (स्त्री॰)—सा। क्या—किं। रोशनाई—मसिः। गाड़ी—शकटः। आग—अग्निः। सुरेश—सुरेशः। कुत्ता—कुक्कुरः। पुलिस—राजपुरुषः। कहाँ—कुत्र। यह (स्त्री॰)—इयम्। यह (नपुं॰)—इदम्। सुन्दर—सुन्दरम् (नपुं॰)। सब—सर्वे। कौन—कः।

1. संस्कृत में अनुवाद करें—
गाय चरती है। वह क्या खाता है? रोशनाई नहीं है। वह हँसती है। सुरेश गाता है। गाड़ी चलती है। कुत्ता दौड़ता है। आग जलती है। हाथी नहीं दौड़ता है। पुलिस रक्षा करती है। दीया नहीं जलता है। लड़की कहाँ जाती है? वह क्या गाता है? यह बकरी चरती है। यह फल सुन्दर है। सब जाते हैं। कौन खेलता है?

2. निम्नलिखित शब्दों की द्वितीया, पञ्चमी एवं सप्तमी विभक्तियों के सभी वचनों में रूप लिखें।
फलम्, साधु, अस्मद्, तद् (पुँल्लिग), इदम् (स्त्री॰)

3. निम्नलिखित शब्दों की षष्ठी विभक्ति के सभी वचनों में रूप लिखें।
सर्व, किम् (पुं॰), युष्मद्, मातृ

4. निम्नलिखित शब्दों की विभक्ति बताएँ।
सर्वस्मै, कस्मिन्, वयम्, त्वया, तस्याः, काः, इमे

संख्यावाचक शब्द

	पुँल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
एक (एक)	एकः	एका	एकम्
द्वि (दो)	द्वौ	द्वे	द्वे
त्रि (तीन)	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
चतुर् (चार)	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
पञ्चन् (पाँच)	पञ्च	पञ्च	पञ्च

'पञ्चन्' के समान ही षद् (छः), सप्तन् (सात), अष्टन् (आठ), नवन् (नौ), दशन् (दस) इत्यादि शब्द (अष्टादश, अठारह तक) बहुवचनान्त होते हैं और इनके रूप 'पञ्चन्' के समान चलते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूरणार्थक संख्या

पुँल्लिग	नपुंसकलिंग	स्त्रीलिंग
प्रथमः (पहला)	प्रथमम्	प्रथमा (पहली)
द्वितीयः (दूसरा)	द्वितीयम्	द्वितीया (दूसरी)
तृतीयः (तीसरा)	तृतीयम्	तृतीया (तीसरी)
चतुर्थः (चौथा)	चतुर्थम्	चतुर्थी (चौथी)
पञ्चमः (पाँचवाँ)	पञ्चमम्	पञ्चमी (पाँचवीं)
षष्ठः (छठा)	षष्ठम्	षष्ठी (छठी)
सप्तमः (सातवाँ)	सप्तमम्	सप्तमी (सातवीं)
अष्टमः (आठवाँ)	अष्टमम्	अष्टमी (आठवीं)
नवमः (नवाँ)	नवमम्	नवमी (नवीं)
दशमः (दसवाँ)	दशमम्	दशमी (दसवीं)

अनुवाद

एक लड़का जाता है—एकः बालकः गच्छति।
एक लड़की खाती है—एका बालिका खादति।
दो लड़के जाते हैं—दौ बालकौ गच्छतः।
दो लड़कियाँ पढ़ती हैं—द्वे बालिके पठतः।
वहाँ तीन मुनि हैं—तत्र त्रयः मुनयः सन्ति।
वे लड़के जाते हैं—ते बालकाः गच्छन्ति।
ये तीन पत्ते हैं—इमानि त्रीणि पत्राणि सन्ति।

—— अभ्यास ——

क्रिया-संकेत—

दो जाते हैं—गच्छतः
दो पढ़ते हैं—पठतः
खाते हैं—खादन्ति
पढ़ते हैं—पठन्ति
जाते हैं—गच्छन्ति
(कई) हैं—सन्ति

शब्द-संकेत—

एक (पुँ॰) एकः। एक (स्त्री॰)—एका। दो (पुँ॰)—द्वौ। दो (स्त्री॰)—द्वे। तीन (पुँ॰)—त्रयः। बन्दर—वानरः। पाँचवें—पञ्चमे। वहाँ—तत्र। घोड़ा—अश्वः। पहला—प्रथमः। लड़का—पुत्रः।

1. संस्कृत में अनुवाद करें—

एक लड़का पढ़ता है। एक घोड़ा नहीं दौड़ता है। एक लड़की जाती है। रमा क्या पढ़ती है? दो छात्र पढ़ते हैं। दो लड़कियाँ जाती हैं। वहाँ तीन बन्दर हैं। दिनेश पाँचवें वर्ग में पढ़ता है। वह प्रदीप का पहला लड़का है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

— 5. कारक —

क्रिया के साथ जिसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध हो, उसे कारक कहते हैं। कारक के छह भेद हैं—कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण। क्रिया के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं रहने के कारण सम्बन्ध और सम्बोधन कारक नहीं कहलाते हैं।

कर्ताकारक

क्रिया करनेवाले को कर्ता कहते हैं। कर्तृवाच्य के कर्ताकारक में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा—रामः खादति (राम खाता है)। यहाँ "खादति' क्रिया का सम्पादक 'रामः' है, इसलिए रामः कर्ता हुआ और उसमें प्रथमा विभक्ति हुई। ऐसे ही—श्यामा पठति, राधा गच्छति आदि में समझना चाहिए। सम्बोधन में भी प्रथमा विभक्ति होती है। यथा—हे राम! अयि राधे! (हे राधा!) अरे बालकाः! (ओ लड़के!) इत्यादि।

कर्मकारक

क्रिया का फल जिसपर पड़े उसे कर्मकारक कहते हैं। कर्मकारक में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—बालकः दुग्धं पिबति (बच्चा दूध पीता है)। यहाँ 'पिबति' क्रिया का फल दूध है, इसलिए 'दुग्धं' कर्मकारक हुआ और उसमें द्वितीया विभक्ति हुई। ऐसे ही 'सः चन्द्रं पश्यति', 'बालिका भक्तं खादति' आदि वाक्यों में समझना चाहिए।

करणकारक

क्रिया करने में जो अत्यन्त सहायक हो, उसे करणकारक कहते हैं। करणकारक में तृतीया विभक्ति होती है। यथा—सः कलमेन लिखति (वह कलम से लिखता है)। यहाँ 'लिखति' क्रिया का अत्यन्त सहायक कलम है, इसीलिए यह करणकारक हुआ और इसमें तृतीया विभक्ति हुई।

सह, साकम्, सार्द्धम् (साथ) इत्यादि शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा—पुत्रेण सह पिता आगच्छति (पुत्र के साथ पिता आता है)। मया साकं स गमिष्यति (मेरे साथ वह जाएगा)। यहाँ 'सह' का योग रहने के कारण 'पुत्रेण' और 'मया' में तृतीया विभक्ति हुई।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सम्प्रदानकारक

जिसको दिया जाए, उसे सम्प्रदानकारक कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—भिक्षुकाय अन्नं देहि (भिखारी को अन्न दो)। यहाँ भिक्षुक को अन्न दिया जाता है, इसलिए इसमें चतुर्थी विभक्ति हुई।

नमः, स्वस्ति आदि के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है; जैसे—श्रीगणेशाय नमः (गणेशजी को प्रणाम है), लोकाय स्वस्ति (संसार का कल्याण हो) आदि।

अपादानकारक

जहाँ से कोई वस्तु अलग हो या उत्पन्न हो उसे अपादानकारक कहते हैं। अपादानकारक में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—वृक्षात् पत्रं पतति (पेड़ से पत्ता गिरता है)। यहाँ वृक्ष से पत्ता अलग होता है, इसलिए वृक्ष में पञ्चमी विभक्ति हुई। ऐसे ही—धनात् सुखं भवति (धन से सुख होता है), गोमयात् कृमयः उद्भवन्ति (गोबर से कीड़े जन्म लेते हैं) आदि वाक्यों में समझना चाहिए।

सम्बन्ध

सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा—रामस्य पुस्तकम् अस्ति (राम की किताब है)। यहाँ राम के साथ पुस्तक का सम्बन्ध है, इसलिए राम में षष्ठी विभक्ति हुई । ऐसे ही 'तव घटिका' (तुम्हारी घड़ी), 'मम गृहम्' (मेरा घर), 'तस्य अश्वः' (उसका घोड़ा), 'सीतायाः आभूषणं' (सीता का गहना) आदि में समझना चाहिए।

अधिकरणकारक

आधार को अधिकरण कहते हैं। अधिकरणकारक में सप्तमी विभक्ति होती है। यथा—पात्रे घृतम् अस्ति (बरतन में घी है)। यहाँ 'घृतं' का आधार पात्र है, इसलिए यह अधिकरणकारक हुआ तथा इसमें सप्तमी विभक्ति हुई। ऐसे ही जलपात्रे जलम् अस्ति (लोटे में जल है)। गृहे तिष्ठति (घर में ठहरता है) आदि में समझना चाहिए।

अनुवाद

लड़का पाठ याद करता है—बालकः पाठं स्मरति।
श्यामा पत्र लिखती है—श्यामा पत्रं लिखति।
गणेश घर नहीं जाता है—गणेशः गृहं न गच्छति।
वह डंडे से पीटता है—सः लगुडेन ताडयति।
राम के साथ सीता जाती है—रामेण सह सीता गच्छति।
श्रीकृष्ण को प्रणाम है—श्रीकृष्णाय नमः।
वह छात्र को पुस्तक देता है—सः छात्राय पुस्तकं यच्छति।
नरेश विद्यालय से आता है—नरेशः विद्यालयात् आगच्छति।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राम का घोड़ा दौड़ता है—रामस्य अश्वः धावति।
वन में सिंह रहता है—वने सिंहः वसति।
लता में फूल हैं—लतायाम् पुष्पाणि सन्ति।

—— अभ्यास ——

क्रिया-संकेत—

याद करता है—स्मरति
पीटता है—ताडयति
देता है—यच्छति
भूलता है—विस्मरति
मारता है—मारयति
आता है—आगच्छति

शब्द-संकेत—

दूध—दुग्धम्। घर—गृहम्। व्याधा—व्याधः। तीर से—बाणेन। कलम से—कलमेन। पत्र—पत्रम्। पाठ (को)—पाठम्। वह (नपुं)—तत्। जल—जलम्। साथ—सह। किसान—कृषकः। पत्ता—पत्रम् । किताब—पुस्तकम्। मैदान में—क्रीडाक्षेत्रे।

1. संस्कृत में अनुवाद करें—
सुरेश पाठ भूलता है। वह दूध पीता है। रमेश घर जाता है। व्याधा तीर से मारता है। शेखर कलम से क्या लिखता है? वह पत्र नहीं पढ़ता है। शिक्षक के साथ शिष्य आता है। शिव को प्रणाम है। किसान गरीब को अन्न देता है। क्या वह छात्र के लिए क़िताब है? पेड़ से पत्ता गिरता है। गाँव से लड़का नहीं आता है। मोहन की किताब कहाँ है? राम मैदान में खेलता है। नदी में जल है।

2. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कर लिखें।
बालकः पत्रः लिखति। छात्राः पुस्तकं पठति। रामस्य सह मोहनः आगच्छति। व्याधः बाणात् खगं मारयति। राजा भिक्षुकं अन्नं यच्छति। विद्यालयेन छात्राः गच्छति। बालकौ गच्छन्ति। इदम् ममस्य पुस्तकं अस्ति।

3. सम्प्रदानकारक किसे कहते हैं?

4. अपादानकारक के दो उदाहरण दें।

5. निम्नलिखित शब्दों के कारक बताएँ।
बालकेन, ग्रामे, देवाय, तस्मिन्, मम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. विशेषण

संज्ञा की विशेषता बतानेवाले शब्द विशेषण कहलाते हैं। संस्कृत में संज्ञा (विशेष्य) के जो लिंग, विभक्ति और वचन होते हैं, वे ही विशेषण के भी होते हैं। नीचे कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं।

पुँल्लिग में, यथा—

1. एकवचन—सुशील लड़का—सुशीलः बालकः
2. द्विवचन—दो सुशील लड़के—सुशीलौ बालकौ
3. बहुवचन—(कई) सुशील लड़के—सुशीलाः बालकाः

ऊपर प्रथम वाक्य में संज्ञा 'बालकः' पुँल्लिग एकवचन है, इसलिए उसका विशेषण 'सुशीलः' का भी पुँल्लिग एकवचन में प्रयोग हुआ। दूसरे वाक्य में 'बालकौ' पुँल्लिग द्विवचनान्त संज्ञा है, इसलिए उसका विशेषण 'सुशीलौ' भी पुँल्लिग द्विवचनान्त हुआ। इसी प्रकार, तीसरे वाक्य में 'बालकाः' पुँल्लिग बहुवचनान्त है, इसलिए उसका विशेषण 'सुशीलाः' भी पुँल्लिग बहुवचन के रूप में प्रयुक्त हुआ। बालक और उसके विशेषण सुशील शब्दों के रूप देव शब्द के समान होंगे।

स्त्रीलिंग में, यथा—

1. एकवचन—सुशील लड़की—सुशीला बालिका
2. द्विवचन—दो सुशील लड़कियाँ—सुशीले बालिके.
3. बहुवचन—सुशील लड़कियाँ—सुशीलाः बालिकाः

उपर्युक्त वाक्यों में विशेष्य 'बालिका' के लिंग और वचन के अनुसार ही विशेषण 'सुशील' के लिंग और वचन हुए हैं। बालिका और उसके विशेषण सुशीला शब्दों के रूप 'लता' के समान होंगे।

नपुंसकलिंग में, यथा—

1. एकवचन—सुन्दर फूल—सुन्दरं पुष्पम्
2. द्विवचन—दो सुन्दर फूल—सुन्दरे पुष्पे
3. बहुवचन—कई सुन्दर फूल—सुन्दराणि पुष्पाणि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिए गए उदाहरणों में नपुंसक विशेष्य 'पुष्पं' के लिंग और वचन के अनुसार ही 'सुन्दर' विशेषण के लिंग और वचन हुए हैं। 'पुष्पं' और उसके विशेषण 'सुन्दरं' के रूप फल शब्द के समान होंगे।

नीचे कुछ विविध विशेषणों से युक्त विशेष्य (संज्ञा) दिए गए हैं।

यथा—

सुन्दर लड़का—सुन्दरः बालकः
सुन्दर लड़की—सुन्दरी बालिका
सुन्दर फल—सुन्दरं (शोभनं) फलम्
हरे पत्ते—हरितानि पत्राणि
मीठे फल—मधुराणि फलानि
बुद्धिमान् विद्यार्थी—बुद्धिमान् छात्रः
होशियार स्त्री—बुद्धिमती नारी
अच्छी पुस्तक—शोभनं पुस्तकम्
यह पंडित—अयं पंडितः
यह लता—इयं लता
यह पानी—इदम् जलम्
वह घोड़ा—सः अश्वः
वे दोनों घोड़े—तौ अश्वौ
वे लड़के—ते बालकाः
वह शिक्षिका—सा शिक्षिका
वे दो शिक्षिकाएँ—ते शिक्षिके
वे शिक्षिकाएँ—ताः शिक्षिकाः
कोई पुरुष—कश्चित् पुरुषः
कोई स्त्री—काचित् स्त्री
अपना पत्र—स्वकीयं पत्रम्
मधुर वचन—मधुरं वचनम्

अनुवाद

सुन्दर फल है—सुन्दरं फलम् अस्ति।
वह अच्छा लड़का है—सः शोभनः बालकः अस्ति।
वह लड़की पढ़ती है—सा बालिका पठति।
फूल सुन्दर नहीं है—पुष्पं सुन्दरं न अस्ति।
तीन लड़के खेलते हैं—त्रयः बालकाः खेलन्ति।
उजला बकरा चरता है—श्वेतः अजः चरति।
यह काली गाय है—इयम् कृष्णा गौः अस्ति।
यह मुनि का आश्रम है—अयम् मुनेः आश्रमः अस्ति।
क्या बकरियाँ चरती हैं—किम् अजाः चरन्ति?
वह सुन्दर घोड़ा है—सः सुन्दरः अश्वः अस्ति।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

—— अभ्यास ——

क्रिया-संकेत—

दो घूमते हैं—भ्रमतः। खेलते हैं—खेलन्ति। दो दौड़ते हैं—धावतः। चरते हैं—चरन्ति।

शब्द-संकेत—

पत्ता—पत्रम्। हरा—हरितम्। मीठा—मधुरम्। तीन (पुँ॰)—त्रयः। तीन (स्त्री॰)—तिस्रः। काला—कृष्णः। काली—कृष्णा। दो (पुँ॰)—द्वौ। दो (स्त्री॰)— द्वे। वह (पुँ॰)—सः। वह (स्त्री॰)—सा। घोड़ी—अश्वा। चालाक—चतुरः। रोज—प्रतिदिनम्। अच्छे—शोभनाः। यह (पुँ॰)—अयम्। गाँव—ग्रामः। वे—ते। मूर्ख—मूर्खाः। हरिण—हरिणः।

1. संस्कृत में अनुवाद करें—

पत्ता हरा है। फल मीठा नहीं है। तीन छात्र पढ़ते हैं। तीन लड़कियाँ पढ़ती हैं। काला कुत्ता दौड़ता है। काली बकरी चरती है। वह घोड़ी नहीं दौड़ती है। क्या वह हरिण दौड़ता है? दो शिक्षक घूमते हैं। दो लड़के नहीं दौड़ते हैं। वह चालाक लड़का है। अच्छे लड़के रोज पढ़ते हैं। यह राम का गाँव है। क्या वे नहीं खेलते हैं? वे मूर्ख हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. अव्यय

लिंग, विभक्ति या वचन के कारण जिन शब्दों में किसी तरह का परिवर्तन नहीं हो, वे अव्यय कहलाते हैं। नीचे कुछ अर्थसहित अव्यय दिए जा रहे हैं।

इदानीं—इस समय
तदानीं—उस समय
पुरा—प्राचीन समय में
पश्चात्—पीछे
अकस्मात्—अचानक
प्राक्—पहले
सर्वतः—चारों तरफ
सर्वत्र—सब जगह
सम्प्रति—इस समय
च—और
सर्वदा—सब समय
सदा—हमेशा
प्रतिदिनम्—हर रोज
श्वः—आनेवाला कल
ह्यः—बीता हुआ कल
परश्वः—परसों (आनेवाला)
दिवा—दिन में
नक्तम्—रात में
सायम्—साँझ में
पुनः—फिर
उपरि—ऊपर
ईषत्—थोड़ा
अधः—नीचे
आम्—हाँ
किञ्चित्—थोड़ा
एव—ही

अत्र—यहाँ
यत्र—जहाँ
पुरः—आगे
तत्र—वहाँ
कुत्र—कहाँ
यदा—जब
तदा—तब
कदा—कब
अद्य—आज
यथा—जैसे
तथा—वैसे
अपि—भी
अथवा—या
कथम्—किस तरह, क्यों
किम्—क्या
एवम्—ऐसा
नहि, न, नो—नहीं
तावत्—तब तक
यावत्—जब तक
अतः—इसलिए
कुतः—कहाँ से
पृथक्—अलग
शीघ्रम्—जल्द
मिथ्या—झूठ
तूष्णीम्—चुपचाप
वा—या, अथवा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

— 8. स्त्री-प्रत्यय —

पुँल्लिग से स्त्रीलिंग बनाने में टाप् (आ), ङीप् (ई) आदि अनेक प्रत्ययों का व्यवहार होता है। जैसे—

बाल—बाला	अज—अजा (बकरी)
अश्व—अश्वा (घोड़ी)	सरल—सरला
चतुर—चतुरा	ज्येष्ठ—ज्येष्ठा
बालक—बालिका	गायक—गायिका
प्रथम—प्रथमा	द्वितीय—द्वितीया
तृतीय—तृतीया	चतुर्थ—चतुर्थी
कृष्ण—कृष्णा	कृपण—कृपणा
कुमार—कुमारी	श्वेत—श्वेता (उजली)
देव—देवी	तरुण—तरुणी (युवती)
श्रीमत्—श्रीमती	पञ्चम—पञ्चमी
सिंह—सिंही	व्याघ्र—व्याघ्री
ब्राह्मण—ब्राह्मणी	बुद्धिमान्—बुद्धिमती
चन्द्रमुख—चन्द्रमुखी	विद्वान्—विदुषी
राजन्—राज्ञी	सुन्दर—सुन्दरी
नद—नदी	गच्छन्—गच्छन्ती (जाती हुई)

अनुवाद

सीता इस समय खाती है—सीता इदानीं खादति।
वह कल घर जाएगी—सा श्वः गृहं गमिष्यति।
सोहन कल घर गया—सोहनः ह्यः गृहम् अगच्छत्।
यहाँ पानी है—अत्र जलम् अस्ति।
वहाँ खेत है—तत्र क्षेत्रम् अस्ति।
श्याम कब पढ़ेगा—श्यामः कदा पठिष्यति?
किताब कहाँ है—पुस्तकं कुत्र अस्ति?
हरि सुबह में टहलता है—हरिः प्रातः भ्रमति।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

—— अभ्यास ——

क्रिया-संकेत—

टहलता है—भ्रमति	जाएगा—गमिष्यति
बोलता है—वदति	पढ़ेगा—पठिष्यति
करता है—करोति	गया—अगच्छत्

शब्द-संकेत—
साँझ में—सायम्। सुबह-शाम—प्रातःसायम्। भाई—भ्राता। सब जगह—सर्वत्र। लोग—जनाः। झूठ—मिथ्या। मुंगेर—मुद्गलपुरम्।

1. संस्कृत में अनुवाद करें—
दिनेश इस समय पढ़ता है। वह साँझ में नहीं टहलता है। रमेश सुबह-शाम टहलता है। बलराम वहाँ क्या करता है? सब जगह लोग हैं। वह झूठ बोलता है। मोहन झूठ नहीं बोलता है। यहाँ पानी नहीं है। राम कल मुंगेर जाएगा। वह कल विद्यालय गया।

2. संस्कृत में वाक्य बनाएँ—
सर्वत्र, सम्प्रति, कुतः, सदा, परश्वः, पुनः, कदा, तत्र, अद्य, प्रतिदिनम्, शीघ्रम्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

9. तिङन्त-प्रकरण

भू, पठ्, गम्, कृ इत्यादि धातुओं में तिङ् विभक्तियाँ लगाकर जो क्रिया-पद बनते हैं, उन्हें तिङन्त कहते हैं। संस्कृत में कालबोधक दस लकार हैं—लट्, लोट्, लङ्, लृट्, विधिलिङ्, लिट्, लुङ्, लेट्, आशीर्लिङ् और लृङ्। यहाँ केवल प्रथम चार लकारों का ही उल्लेख किया गया है। संस्कृत के धातु भ्वादि, अदादि, जुहोत्यादि, दिवादि, स्वादि, तुदादि, रुधादि, तनादि, क्र्यादि तथा चुरादि इन दस गणों में बँटे हुए हैं।

सकर्मक और अकर्मक

धातुओं (क्रिया) के दो प्रकार होते हैं—**सकर्मक** और **अकर्मक**। जिनमें कर्म लगे, वे सकर्मक और जिनमें कर्म नहीं लगे, वे अकर्मक धातु कहलाते हैं। खादन, गमन; पठन, चिन्तन, दर्शन, पूजन इत्यादि अर्थबोधक धातु सकर्मक कहलाते हैं। यथा—सीता ओदनं खादति, अहं चन्द्रं पश्यामि आदि।

भय, लज्जा, हर्ष, शोक, रोदन, नर्तन, शयन, मरण, जीवन, वृद्धि, क्षय, सत्ता, स्थिति, जागरण, दीप्ति, खेल आदि अर्थवाले धातु अकर्मक कहलाते हैं। जैसे—शिशुः वानरात् विभेति।

पुरुष

प्रत्येक लकार में तीन पुरुष (उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष) रहते हैं और प्रत्येक पुरुष में तीन वचन (एकवचन, द्विवचन और बहुवचन) रहते हैं। अस्मद् शब्द (मैं) को उत्तम पुरुष (फर्स्ट पर्सन), युष्मद् शब्द (तू) को मध्यम पुरुष (सेकंड पर्सन) तथा शेष सभी शब्दों को अन्य पुरुष या प्रथम पुरुष (थर्ड पर्सन) कहते हैं। जैसे—इदम् (यह), तत् (वह), राम, बालक, नदी, आकाश, पक्षी, पर्वत, ब्रह्म इत्यादि।

काल

क्रिया के बोध के लिए तीन काल माने जाते हैं—वर्तमानकाल, भूतकाल और भविष्यत्काल।

(1) जिस समय क्रिया हो रही होती है, वह वर्तमानकाल होता है। इसमें लट् का प्रयोग होता है। यथा—स भवति, त्वं पठसि, अहं खादामि आदि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(2) क्रिया करने में जो समय बीत गया होता है, वह भूतकाल होता है, इससे बीती हुई क्रिया का बोध होता है। भूतकाल में धातु से लङ् होता है। यथा—रामः अभवत् = राम हुआ था। त्वम् अपठः = तुमने पढ़ा था। अहं अखादम् = मैंने खाया था।

(3) भविष्य में जो क्रिया की जाएगी, उसमें भविष्यत्काल होता है। भविष्य में होनेवाली क्रिया के बोध के लिए धातु से लृट् होता है। यथा—स भविष्यति = वह होगा। त्वं पठिष्यसि = तुम पढ़ोगे। अहं खादिष्यामि = मैं खाऊँगा। यहाँ भविष्य में होनेवाली क्रिया का बोध होता है।

नोट—तिङन्त क्रिया में लिंग नहीं होता है, जैसा कि हिन्दी में होता है।

लट् लकार

लट् लकार वर्तमानकाल (जो बीत रहा है) में होता है। जैसे—रामः गच्छति (राम जाता है)। बालकः हसति (लड़का हँसता है)। अहं लिखामि (मैं लिखता हूँ)। त्वं गच्छसि (तू जाता है)। राधा पठति (राधा पढ़ती है)।

लोट् लकार

लोट् लकार आज्ञा, अनुरोध, आशीर्वाद इत्यादि अर्थों में होता है। जैसे—सीता पठतु (सीता पढ़े)। त्वं गच्छ (तुम जाओ)। नृपः चिरं जीवतु (राजा चिरंजीवी हो)। अहं गच्छानि (मैं जाऊँ)।

लङ् लकार

लङ् लकार भूतकाल (जो बीत चुका है) में लगता है। जैसे—दिनेशः गृहम् अगच्छत् (दिनेश घर गया)। अहम् अवदम् (मैंने कहा)। त्वं दुग्धम् अपिबः (तुमने दूध पीया)।

लृट् लकार

लृट् लकार भविष्यत्काल (जो होनेवाला है) में होता है। जैसे—स जलं पास्यति (वह पानी पीएगा)। कार्यं न भविष्यति (काम नहीं होगा)। त्वं द्रक्ष्यसि (तुम देखोगे)। अहं गृहं गमिष्यामि (मैं घर जाऊँगा)।

परस्मैपद एवं आत्मनेपद

संस्कृत के कुछ धातुओं में परस्मैपद की, कुछ धातुओं में आत्मनेपद की तथा कुछ धातुओं में दोनों तरह की विभक्तियाँ लगती हैं। इसलिए वे धातु क्रमशः परस्मैपदी, आत्मनेपदी तथा उभयपदी कहलाते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	अन्य पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
परस्मैपद की	1 2 3	1 2 3	1 2 3
विभक्तियाँ	तिप्, तस्, झि	सिप्, थस्, थ	मिप्, वस्, मस्

नीचे उपर्युक्त विभक्तियों के व्यावहारिक रूप भू-धातु के साथ दिए जा रहे हैं।

परस्मैपद 'भू' (होना)

विभक्ति—लट् (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	ति	तः	अन्ति
मध्यम पुरुष	सि	थः	थ
उत्तम पुरुष	आमि (मि)	आवः (वः)	आमः (मः)

प्रयोग

अन्य पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

विभक्ति—लोट् (अनुज्ञा)

अन्य पुरुष	तु	ताम्	अन्तु
मध्यम पुरुष	अ (हि)	तम्	त
उत्तम पुरुष	आनि	आव	आम

प्रयोग

अन्य पुरुष	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

विभक्ति—लङ् (भूतकाल)

अन्य पुरुष	त्	ताम्	अन्
मध्यम पुरुष	अः	तम्	त
उत्तम पुरुष	अम्	आव	आम

प्रयोग

अन्य पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विभक्ति—लृट् (भविष्यत्काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	स्यति	स्यतः	स्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्यसि	स्यथः	स्यथ
उत्तम पुरुष	स्यामि	स्यावः	स्यामः

प्रयोग

अन्य पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

— 10. अनुवाद के कुछ सामान्य नियम —

जिस वाक्य का संस्कृत में अनुवाद किया जाए, उसे पहले सावधानी से पढ़कर काल, पुरुष, कारक, वचन, क्रिया इत्यादि की पूरी जानकारी ले लेनी चाहिए। कर्तृवाच्य में कर्ता के पुरुष और वचन के अनुसार ही क्रिया के पुरुष और वचन होते हैं। जैसे—

1. कर्ता यदि अन्य (प्रथम) पुरुष, एकवचन हो तो क्रिया में भी अन्य पुरुष और एकवचन होते हैं। जैसे—

रामः पठति—राम पढ़ता है।

यहाँ 'रामः' कर्ता, अन्य पुरुष का एकवचन है, इसलिए 'पठति' क्रिया भी अन्य पुरुष के एकवचन की हुई। इसी तरह, नीचे लिखे वाक्यों में समझना चाहिए।

बालकः धावति—लड़का दौड़ता है।
खगः कूजति—चिड़िया चहकती है।
सिंहः गर्जति—सिंह गरजता है।
छात्रः लिखति—छात्र लिखता है।
सः हसति—वह हँसता है।

2. कर्ता यदि अन्य पुरुष, द्विवचन हो तो क्रिया भी अन्य पुरुष, द्विवचन की होगी। जैसे—

छात्रौ पठतः—दो छात्र पढ़ते हैं।

यहाँ 'छात्रौ' कर्ता, अन्य पुरुष द्विवचन वाला है, इसलिए 'पठतः' क्रिया भी अन्य पुरुष के द्विवचन की हुई। ऐसे ही निम्नलिखित वाक्यों में समझना चाहिए।

बालकौ धावतः—दो लड़के दौड़ते हैं।
खगौ कूजतः—दो चिड़ियाँ चहकती हैं।
सिंहौ गर्जतः—दो सिंह गरजते हैं।
छात्रौ लिखतः—दो छात्र लिखते हैं।
तौ हसतः—वे दोनों हँसते हैं।

3. कर्ता यदि अन्य पुरुष बहुवचनान्त हो तो क्रिया भी अन्य पुरुष के बहुवचन की होगी। जैसे—

छात्राः पठन्ति—छात्र पढ़ते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यहाँ 'छात्राः' अन्य पुरुष बहुवचनान्त कर्ता रहने के कारण 'पठन्ति' क्रिया भी अन्य पुरुष के बहुवचन में हुई। इसी तरह, निम्नलिखित वाक्य बने हैं।

बालकाः धावन्ति—लड़के दौड़ते हैं।
सिंहाः गर्जन्ति—सिंह गरजते हैं।
छात्राः लिखन्ति—छात्र लिखते हैं।
खगाः कूजन्ति—चिड़ियाँ चहकती हैं।
ते हसन्ति—वे हँसते हैं।

4. कर्ता यदि मध्यम पुरुष, एकवचन हो तो क्रिया भी मध्यम पुरुष, एकवचन की होगी। जैसे—त्वम् गच्छसि—तू जाता है।

यहाँ 'त्वम्' कर्ता मध्यम पुरुष, एकवचन का है, इसलिए 'गच्छसि' क्रिया भी मध्यम पुरुष, एकवचन की हुई।

5. कर्ता यदि मध्यम पुरुष, द्विवचन हो तो क्रिया भी मध्यम पुरुष, द्विवचन की होगी। जैसे—युवाम् गच्छथः—तुम दोनों जाते हो।

यहाँ 'युवाम्' मध्यम पुरुष द्विवचनान्त कर्ता है, इसलिए 'गच्छथः' क्रिया भी मध्यम पुरुष, द्विवचन की हुई।

6. कर्ता यदि मध्यम पुरुष बहुवचनान्त हो तो क्रिया भी मध्यम पुरुष, बहुवचन की होगी। जैसे—यूयम् गच्छथ—तुमलोग जाते हो।

यहाँ 'यूयम्' कर्ता मध्यम पुरुष, बहुवचनान्त है, इसलिए 'गच्छथ' क्रिया भी मध्यम पुरुष के बहुवचन में हुई।

7. कर्ता यदि उत्तम पुरुष, एकवचन का हो तो क्रिया भी उत्तम पुरुष, एकवचन की होगी। जैसे—अहम् गच्छामि—मैं जाता हूँ।

यहाँ 'अहम्' कर्ता उत्तम पुरुष, एकवचन का है; इसलिए 'गच्छामि' क्रिया भी उत्तम पुरुष एकवचन की हुई।

8. कर्ता यदि उत्तम पुरुष, द्विवचन का हो तो क्रिया भी उत्तम पुरुष, द्विवचन की होगी। जैसे—आवाम् गच्छावः—हम दोनों जाते हैं।

यहाँ 'आवाम्' कर्ता उत्तम पुरुष, द्विवचन का है, इसलिए 'गच्छावः' क्रिया भी उत्तम पुरुष, द्विवचन की हुई।

9. कर्ता यदि उत्तम पुरुष, बहुवचन का हो तो क्रिया भी उत्तम पुरुष, बहुवचन की होगी। जैसे—वयम् गच्छामः—हमलोग जाते हैं।

यहाँ 'वयम्' कर्ता उत्तम पुरुष, बहुवचन का है, इसलिए 'गच्छामः' क्रिया भी उत्तम पुरुष, बहुवचन की हुई।

सामान्य नियमानुसार वाक्य के आदि में कर्तृ-पद, मध्य में कर्म, करण आदि पद तथा अन्त में क्रिया-पद देना चाहिए। जैसे—बालकः पुस्तकं पठति (लड़का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुस्तक पढ़ता है)। संस्कृत वाक्य में इस नियम में यदि उलट-फेर भी हो जाए तो कोई गड़बड़ी नहीं होती। जैसे—पुस्तकं बालकः पठति; पठति पुस्तकं बालकः।

क्रिया-पद में क्रिया के अनुकूल अर्थवाले धातु के प्रयोग से अनुवाद सुन्दर होता है। जैसे—'वह खाता है' इसका 'स भोजनं करोति' इस कामचलाऊ अनुवाद से 'स खादति' ऐसा अनुवाद करना सुन्दर समझा जाएगा।

आगे 'पठ्' धातु के चार लकारों के सभी पुरुषों एवं वचनों के रूप वाक्य-प्रयोग द्वारा बताए गए हैं, ताकि अनुवाद करने में सुविधा हो।

'पठ्' (पढ़ना)

लट् (वर्तमानकाल)

अन्य (प्रथम) पुरुष

एकवचन—पठति (सः पठति—वह पढ़ता है)
द्विवचन—पठतः (तौ पठतः—वे दोनों पढ़ते हैं)
बहुवचन—पठन्ति (ते पठन्ति—वे सब पढ़ते हैं)

मध्यम पुरुष

एकवचन—पठसि (त्वं पठसि—तू पढ़ता है)
द्विवचन—पठथः (युवाम् पठथः—तुम दोनों पढ़ते हो)
बहुवचन—पठथ (यूयम् पठथ—तुमलोग पढ़ते हो)

उत्तम पुरुष

एकवचन—पठामि (अहं पठामि—मैं पढ़ता हूँ)
द्विवचन—पठावः (आवाम् पठावः—हम दोनों पढ़ते हैं)
बहुवचन—पठामः (वयम् पठामः—हमलोग पढ़ते हैं)

लोट् (अनुज्ञा)

अन्य पुरुष

एकवचन—पठतु (स पठतु—वह पढ़े)
द्विवचन—पठताम् (तौ पठताम्—वे दोनों पढ़ें)
बहुवचन—पठन्तु (ते पठन्तु—वे पढ़ें)

मध्यम पुरुष

एकवचन—पठ (त्वं पठ—तू पढ़)
द्विवचन—पठतम् (युवाम् पठतम्—तुम दोनों पढ़ो)
बहुवचन—पठत (यूयम् पठत—तुमलोग पढ़ो)

उत्तम पुरुष

एकवचन—पठानि (अहं पठानि—मैं पढ़ूँ)
द्विवचन—पठाव (आवाम् पठाव—हम दोनों पढ़ें)
बहुवचन—पठाम (वयम् पठाम—हमलोग पढ़ें)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लङ् (भूतकाल)

अन्य पुरुष

एकवचन–अपठत् (स: अपठत्—उसने पढ़ा)
द्विवचन–अपठताम् (तौ अपठताम्—उन दोनों ने पढ़ा)
बहुवचन–अपठन् (ते अपठन्—उन लोगों ने पढ़ा)

मध्यम पुरुष

एकवचन–अपठ: (त्वम् अपठ:—तूने पढ़ा)
द्विवचन–अपठतम् (युवाम् अपठतम्—तुम दोनों ने पढ़ा)
बहुवचन–अपठत (यूयम् अपठत—तुमलोगों ने पढ़ा)

उत्तम पुरुष

एकवचन–अपठम् (अहम् अपठम्—मैंने पढ़ा)
द्विवचन–अपठाव (आवाम् अपठाव—हम दोनों ने पढ़ा)
बहुवचन–अपठाम (वयम् अपठाम—हमलोगों ने पढ़ा)

लृट् (भविष्यत्काल)

अन्य पुरुष

एकवचन–पठिष्यति (स पठिष्यति—वह पढ़ेगा)
द्विवचन–पठिष्यत: (तौ पठिष्यत:—वे दोनों पढ़ेंगे)
बहुवचन–पठिष्यन्ति (ते पठिष्यन्ति—वे पढ़ेंगे)

मध्यम पुरुष

एकवचन–पठिष्यसि (त्वं पठिष्यसि—तुम पढ़ोगे)
द्विवचन–पठिष्यथ: (युवाम् पठिष्यथ:—तुम दोनों पढ़ोगे)
बहुवचन–पठिष्यथ (यूयम् पठिष्यथ—तुमलोग पढ़ोगे)

उत्तम पुरुष

एकवचन–पठिष्यामि (अहं पठिष्यामि—मैं पढूँगा)
द्विवचन–पठिष्याव: (आवाम् पठिष्याव:—हम दोनों पढ़ेंगे)
बहुवचन–पठिष्याम: (वयम् पठिष्याम:—हमलोग पढ़ेंगे)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

11. धातु-रूप

खेल् (खेलना)

लट् (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खेलति	खेलतः	खेलन्ति
मध्यम पुरुष	खेलसि	खेलथः	खेलथ
उत्तम पुरुष	खेलामि	खेलावः	खेलामः

लोट् (अनुज्ञा)

प्रथम पुरुष	खेलतु	खेलताम्	खेलन्तु
मध्यम पुरुष	खेल	खेलतम्	खेलत
उत्तम पुरुष	खेलानि	खेलाव	खेलाम

लङ् (भूतकाल)

प्रथम पुरुष	अखेलत्	अखेलताम्	अखेलन्
मध्यम पुरुष	अखेलः	अखेलतम्	अखेलत
उत्तम पुरुष	अखेलम्	अखेलाव	अखेलाम

लृट् (भविष्यत्काल)

प्रथम पुरुष	खेलिष्यति	खेलिष्यतः	खेलिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	खेलिष्यसि	खेलिष्यथः	खेलिष्यथ
उत्तम पुरुष	खेलिष्यामि	खेलिष्यावः	खेलिष्यामः

धाव् (दौड़ना)

लट् (वर्तमानकाल)

प्रथम पुरुष	धावति	धावतः	धावन्ति
मध्यम पुरुष	धावसि	धावथः	धावथ
उत्तम पुरुष	धावामि	धावावः	धावामः

लोट् (अनुज्ञा)

प्रथम पुरुष	धावतु	धावताम्	धावन्तु
मध्यम पुरुष	धाव	धावतम्	धावत
उत्तम पुरुष	धावानि	धावाव	धावाम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लङ् (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अधावत्	अधावताम्	अधावन्
मध्यम पुरुष	अधावः	अधावतम्	अधावत
उत्तम पुरुष	अधावम्	अधावाव	अधावाम

लृट् (भविष्यत्काल)

प्रथम पुरुष	धाविष्यति	धाविष्यतः	धाविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	धाविष्यसि	धाविष्यथः	धाविष्यथ
उत्तम पुरुष	धाविष्यामि	धाविष्यावः	धाविष्यामः

लिख् (लिखना)

लट् (वर्तमानकाल)

प्रथम पुरुष	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
मध्यम पुरुष	लिखसि	लिखथः	लिखथ
उत्तम पुरुष	लिखामि	लिखावः	लिखामः

लोट् (अनुज्ञा)

प्रथम पुरुष	लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु
मध्यम पुरुष	लिख	लिखतम्	लिखत
उत्तम पुरुष	लिखानि	लिखाव	लिखाम

लङ् (भूतकाल)

प्रथम पुरुष	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्
मध्यम पुरुष	अलिखः	अलिखतम्	अलिखत
उत्तम पुरुष	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम

लृट् (भविष्यत्काल)

प्रथम पुरुष	लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	लेखिष्यसि	लेखिष्यथः	लेखिष्यथ
उत्तम पुरुष	लेखिष्यामि	लेखिष्यावः	लेखिष्यामः

वद् (बोलना)

लट् (वर्तमानकाल)

प्रथम पुरुष	वदति	वदतः	वदन्ति
मध्यम पुरुष	वदसि	वदथः	वदथ
उत्तम पुरुष	वदामि	वदावः	वदामः

लोट् (अनुज्ञा)

प्रथम पुरुष	वदतु	वदताम्	वदन्तु
मध्यम पुरुष	वद	वदतम्	वदत
उत्तम पुरुष	वदानि	वदाव	वदाम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लङ् (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अवदत्	अवदताम्	अवदन्
मध्यम पुरुष	अवदः	अवदतम्	अवदत
उत्तम पुरुष	अवदम्	अवदाव	अवदाम

लृट् (भविष्यत्काल)

प्रथम पुरुष	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	वदिष्यसि	वदिष्यथः	वदिष्यथ
उत्तम पुरुष	वदिष्यामि	वदिष्यावः	वदिष्यामः

खाद् (खाना)

लट् (वर्तमानकाल)

अन्य/प्रथम पुरुष	खादति	खादतः	खादन्ति
मध्यम पुरुष	खादसि	खादथः	खादथ
उत्तम पुरुष	खादामि	खादावः	खादामः

लोट् (अनुज्ञा)

अन्य पुरुष	खादतु	खादताम्	खादन्तु
मध्यम पुरुष	खाद	खादतम्	खादत
उत्तम पुरुष	खादानि	खादाव	खादाम

लङ् (भूतकाल)

अन्य पुरुष	अखादत्	अखादताम्	अखादन्
मध्यम पुरुष	अखादः	अखादतम्	अखादत
उत्तम पुरुष	अखादम्	अखादाव	अखादाम

लृट् (भविष्यत्काल)

अन्य पुरुष	खादिष्यति	खादिष्यतः	खादिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	खादिष्यसि	खादिष्यथः	खादिष्यथ
उत्तम पुरुष	खादिष्यामि	खादिष्यावः	खादिष्यामः

व्यवहार में आनेवाले कुछ धातुओं के सांकेतिक रूप

धातु	अर्थ	वर्तमान (लट्)	अनुज्ञा (लोट्)	भूत (लङ्)	भविष्यत् (लृट्)
पत्	गिरना	पतति	पततु	अपतत्	पतिष्यति
रक्ष्	रक्षा करना	रक्षति	रक्षतु	अरक्षत्	रक्षिष्यति
लिख्	लिखना	लिखति	लिखतु	अलिखत्	लेखिष्यति
खेल्	खेलना	खेलति	खेलतु	अखेलत्	खेलिष्यति
भ्रम्	घूमना	भ्रमति	भ्रमतु	अभ्रमत्	भ्रमिष्यति
चर्	चरना	चरति	चरतु	अचरत्	चरिष्यति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धातु	अर्थ	वर्तमान (लट्)	अनुज्ञा (लोट्)	भूत (लङ्)	भविष्यत् (लृट्)
गर्ज्	गरजना	गर्जति	गर्जतु	अगर्जत्	गर्जिष्यति
क्रन्द	रोना	क्रन्दति	क्रन्दतु	अक्रन्दत्	क्रन्दिष्यति
रट्	रटना	रटति	रटतु	अरटत्	रटिष्यति
धाव्	दौड़ना	धावति	धावतु	अधावत्	धाविष्यति
हृ	हरना	हरति	हरतु	अहरत्	हरिष्यति
बुध्	जानना	बोधति	बोधतु	अबोधत्	बोधिष्यति
तृ	तैरना	तरति	तरतु	अतरत्	तरिष्यति
तप्	तपना	तपति	तपतु	अतपत्	तप्स्यति
पच्	पकाना	पचति	पचतु	अपचत्	पक्ष्यति
नम्	झुकना	नमति	नमतु	अनमत्	नंस्यति
चल्	चलना	चलति	चलतु	अचलत्	चलिष्यति
वस्	बसना	वसति	वसतु	अवसत्	वत्स्यति

हस् (हँसना)

लट् (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	हसति	हसतः	हसन्ति
मध्यम पुरुष	हससि	हसथः	हसथ
उत्तम पुरुष	हसामि	हसावः	हसामः

लोट् (अनुज्ञा)

अन्य पुरुष	हसतु	हसताम्	हसन्तु
मध्यम पुरुष	हस	हसतम्	हसत
उत्तम पुरुष	हसानि	हसाव	हसाम

लङ् (भूतकाल)

अन्य पुरुष	अहसत्	अहसताम्	अहसन्
मध्यम पुरुष	अहसः	अहसतम्	अहसत
उत्तम पुरुष	अहसम्	अहसाव	अहसाम

लृट् (भविष्यत्काल)

अन्य पुरुष	हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	हसिष्यसि	हसिष्यथः	हसिष्यथ
उत्तम पुरुष	हसिष्यामि	हसिष्यावः	हसिष्यामः

अनुवाद

तुम वहाँ पढ़ो—त्वम् तत्र पठ।
लड़का हँसा—बालकः अहसत्।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुम सच बोलते हो—त्वं सत्यं वदसि।
मैं रोटी खाता हूँ—अहं रोटिकां खादामि।
लड़के खेलते हैं—बालकाः खेलन्ति।
पत्ते गिरते हैं—पत्राणि पतन्ति।
सीता कॉपी पर लिखती है—सीता पुस्तिकायां लिखति।
बच्चे रोते हैं—शिशवः क्रन्दन्ति।
श्याम ने पाठ रटा—श्यामः पाठम् अरटत्।
पेड़ से पत्ते गिरे—वृक्षात् पत्राणि अपतन्।
तुमलोग क्या पढ़ते हो—यूयम् किं पठथ?
हमलोग संस्कृत पढ़ते हैं—वयम् संस्कृतं पठामः।
राधा भात पकाती है—राधा भक्तं पचति।
भवेश ने वेद नहीं पढ़ा—भवेशः वेदं न अपठत्।
लड़की दौड़ेगी—बालिका धाविष्यति।

—— अभ्यास ——

शब्द-संकेत—
आम—आम्रम्। सच—सत्यम्। बच्चे—शिशवः। लेख—लेखम्। पाठ—पाठम्। घर—गृहम्। बगीचे में—उद्याने। सड़क पर—राजमार्गे। रोटी—रोटिकाम्। पंचम वर्ग में—पञ्चमे वर्गे। पत्र—पत्रम्।

1. संस्कृत में अनुवाद करें—
मैं आम खाता हूँ। क्या तुम हँसते हो? वह नहीं हँसा। मैं सच कहता हूँ। वह विद्यालय में पढ़ता है। बच्चे क्यों रोते हैं? मदन ने रामायण पढ़ी। उसने लेख नहीं लिखा। पेड़ से फल गिरे। मोहन विश्वविद्यालय गया। सीता गाती है। मैं घर जाता हूँ। लड़के विद्यालय से घर गए। तुमलोग क्या लिखते हो? हमलोग पाठ लिखते हैं। तुम कहाँ घूमते हो? मैं बगीचे में घूमता हूँ। सड़क पर कुत्ते दौड़ते हैं। रमेश रोटी पकाता है। रेणुका पाँचवें वर्ग में पढ़ती है। राम वहाँ पढ़े (पठतु)। लड़के बगीचे में खेलें (खेलन्तु)। राधा पत्र लिखेगी (लेखिष्यति)।

2. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करें।
बालकाः कुत्र खेलति? त्वम् सत्यः न वदति। छात्राः किं लिखथ। अहम् न हसति। यूयम् किं रोटिका खादन्ति। वयम् गृहं न गच्छामि। तौ सत्यं न वदति। क्रीडाक्षेत्रे राधा न खेलसि।

3. निम्नलिखित धातुओं के लट् लकार, मध्यम पुरुष के सभी वचनों के रूप लिखें।
पठ्, वद्, हस्, क्रन्द्, धाव्, भ्रम्

4. निम्नलिखित धातुओं के लृट् लकार, उत्तम पुरुष के सभी वचनों के रूप लिखें।
भू, लिख्, पत्, खेल् हस्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ परिवर्तनीय धातु

धातु	आदेश	लट् (वर्तमानकाल)
गम् (जाना)	गच्छ	गच्छति (जाता है)
इष् (चाहना)	इच्छ	इच्छति (चाहता है)
दृश् (देखना)	पश्य	पश्यति (देखता है)
स्था (ठहरना)	तिष्ठ	तिष्ठति (ठहरता है)
दाण् (देना)	यच्छ	यच्छति (देता है)
पा (पीना)	पिब	पिबति (पीता है)
घ्रा (सूँघना)	जिघ्र	जिघ्रति (सूँघता है)
प्रच्छ् (पूछना)	पृच्छ	पृच्छति (पूछता है)

गम् (गच्छ)—जाना

लट् (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लोट् (अनुज्ञा)

अन्य पुरुष	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

लङ् (भूतकाल)

अन्य पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

लृट् (भविष्यत्काल)

अन्य पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

दृश् (पश्य)—देखना

लट् (वर्तमानकाल)

अन्य पुरुष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यम पुरुष	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोट् (अनुज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम पुरुष	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तम पुरुष	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

लङ् (भूतकाल)

अन्य पुरुष	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यम पुरुष	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तम पुरुष	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

लृट् (भविष्यत्काल)

अन्य पुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

कुछ परिवर्तनीय धातुओं के सांकेतिक रूप

धातु	अर्थ	लट्	लोट्	लङ्	लृट्
स्था	ठहरना	तिष्ठति	तिष्ठतु	अतिष्ठत्	स्थास्यति
दाण्	देना	यच्छति	यच्छतु	अयच्छत्	दास्यति
पा	पीना	पिबति	पिबतु	अपिबत्	पास्यति
घ्रा	सूँघना	जिघ्रति	जिघ्रतु	अजिघ्रत्	घ्रास्यति
जि	जीतना	जयति	जयतु	अजयत्	जेष्यति
नी	ले जाना	नयति	नयतु	अनयत्	नेष्यति

अस्—होना

लट् (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यम पुरुष	असि	स्थः	स्थ
उत्तम पुरुष	अस्मि	स्वः	स्मः

लोट् (अनुज्ञा)

अन्य पुरुष	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
मध्यम पुरुष	एधि	स्तम्	स्त
उत्तम पुरुष	असानि	असाव	असाम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लङ् (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम पुरुष	आसीः	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

लृट् (भविष्यत्काल)

अन्य पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

कृ—करना (उभयपदी)

लट् (वर्तमानकाल)—परस्मैपदी

अन्य पुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यम पुरुष	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लोट् (अनुज्ञा)

अन्य पुरुष	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यम पुरुष	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उत्तम पुरुष	करवाणि	करवाव	करवाम

लङ् (भूतकाल)

अन्य पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लृट् (भविष्यत्काल)

अन्य पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

पा (पिब)—पीना

लट् (वर्तमानकाल)

अन्य पुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः

लोट् (अनुज्ञा)

अन्य पुरुष	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुष	पिब	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लङ् (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
अन्य पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुष	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उत्तम पुरुष	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

लृट् (भविष्यत्काल)

अन्य पुरुष	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

स्था (तिष्ठ)—ठहरना

लट् (वर्तमानकाल)

अन्य पुरुष	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
मध्यम पुरुष	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उत्तम पुरुष	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

लोट् (अनुज्ञा)

अन्य पुरुष	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
मध्यम पुरुष	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उत्तम पुरुष	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

लङ् (भूतकाल)

अन्य पुरुष	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
मध्यम पुरुष	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उत्तम पुरुष	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

लृट् (भविष्यत्काल)

अन्य पुरुष	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उत्तम पुरुष	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

दाण् (यच्छ)—देना

लट् (वर्तमानकाल)

अन्य पुरुष	यच्छति	यच्छतः	यच्छन्ति
मध्यम पुरुष	यच्छसि	यच्छथः	यच्छथ
उत्तम पुरुष	यच्छामि	यच्छावः	यच्छामः

लोट् (अनुज्ञा)

अन्य पुरुष	यच्छतु	यच्छताम्	यच्छन्तु
मध्यम पुरुष	यच्छ	यच्छतम्	यच्छत
उत्तम पुरुष	यच्छानि	यच्छाव	यच्छाम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लङ् (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	अयच्छत्	अयच्छताम्	अयच्छन्
मध्यम पुरुष	अयच्छः	अयच्छतम्	अयच्छत
उत्तम पुरुष	अयच्छम्	अयच्छाव	अयच्छाम

लृट् (भविष्यत्काल)

अन्य पुरुष	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
मध्यम पुरुष	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उत्तम पुरुष	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

धातुकोश

आगच्छति—आता है
उपविशति—बैठता है
उत्तिष्ठति—उठता है
आनयति—लाता है
विलसति—शोभता है
प्रणमति—प्रणाम करता है
नि:सरति—निकलता है
उत्पतति—उड़ता है
आचरति—आचरण करता है
विरमति—रुकता है
विलपति—विलाप करता है
प्रसीदति—प्रसन्न होता है
विकसति—खिलता है
अनुगच्छति—पीछे चलता है
अनुभवति—अनुभव करता है
विस्मरति—भूलता है
विहसति—मुस्कुराता है
आरोहति—चढ़ता है
अनुकरोति—नकल करता है
अपकरोति—अपकार करता है
अवतरति—उतरता है
उत्तरति—उत्तर देता है, पार करता है
प्रविशति—प्रवेश करता है

कूजति—कूजता है
गायति—गाता है
वर्षति—बरसता है
खनति—खोदता है
निन्दति—निन्दा करता है
दशति—डँसता है
दहति—जलता है
ज्वलति—जलता है
मुञ्चति—छोड़ता है
फलति—फलता है
गर्जति—गरजता है
कर्षति—खींचता है
धरति—धरता है
स्मरति—याद करता है
अर्चति—पूजा करता है
क्रीडति—खेलता है
गलति—गलता है
पृच्छति—पूछता है
वहति—ढोता है
ताडयति—पीटता है
गणयति—गिनता है
भजति—भजता है
हन्ति—मारता है

अनुवाद

लड़का चन्द्रमा देखता है—बालक: चन्द्रं पश्यति।
वे जल पीते हैं—ते जलं पिबन्ति।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वह अनाज ले जाता है—सः अन्नं नयति।
राजा गरीब को धन देगा—नृपः निर्धनाय धनं दास्यति।
मैं तन्दुरुस्त हूँ—अहं स्वस्थः अस्मि।
एक राजा था—एकः राजा आसीत्।
नरेश काम नहीं करता है—नरेशः कार्यम् न करोति।
तुम किस वर्ग में पढ़ते हो—त्वम् कस्मिन् वर्गे पठसि?
मैं छठे वर्ग में पढ़ता हूँ—अहं षष्ठे वर्गे पठामि।
रमेश कहाँ ठहरेगा—रमेशः कुत्र स्थास्यति।
बच्चे दूध पीते हैं—शिशवः दुग्धं पिबन्ति।

—— अभ्यास ——

शब्द-संकेत—
तमाशा—कौतुकम्। स्कूल—विद्यालयः। पुस्तक—पुस्तकम्। संतुष्ट—संतुष्टः। वहाँ—तत्र। यहाँ—अत्र। डॉक्टर—चिकित्सकः। पंडित—पंडितः। काम—कार्यम्। किस स्थान में—कस्मिन् स्थाने। बकरे को—अजम्। कीचड़ में—कर्दमे।

1. संस्कृत में अनुवाद करें—
मोहन तमाशा देखता है। सीता रामायण पढ़ती है। वह दूध नहीं पीता है। छात्र स्कूल गया। मोहन नहीं गया। राधा पुस्तक ले जाती है। वह दूध नहीं ले जाता है। सुरेन्द्र छात्र को पुस्तक देता है। वह दरिद्र को अन्न नहीं देता है। मैं सन्तुष्ट हूँ। वहाँ एक डॉक्टर था। यहाँ पंडित नहीं है। सीता प्रश्न पूछती है। दिनेश काम करता है। रमेश क्या करता है? तुम किस स्थान में पढ़ते हो? मैं हसनपुर में पढ़ता हूँ। वह गाड़ी से उतरता है। अशोक बकरे को मारता है। राम कीचड़ में गिर पड़ा (अपतत्)।

2. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कर लिखें।
अहम् गृहं गच्छति। रामः किं पठसि। त्वम् पुस्तकं पठामि। बालकः न पठन्ति। बालिकाः गृहं गमिष्यति। वयम् कार्यं करिष्यन्ति। वृक्षेन पत्रं पतन्ति। बालकः स्वस्थः अस्मि। तौ सत्यं वदन्ति।

3. संस्कृत में वाक्य बनाएँ—
अपठत्, वदन्ति, हसामि, आसीत्, करोषि, लेखिस्यति, अतिष्ठत्

4. निम्नलिखित शब्दों के रूप पंचमी विभक्ति के सभी वचनों में लिखें।
मुनि, पति, साधु, पितृ, युष्मद्, सर्व, इदम् (पुं०)

5. निम्नलिखित धातुओं के रूप लृट् लकार प्रथम पुरुष के सभी वचनों में लिखें।
अस्, दाण्, हस्, खेल्, गम्

6. निम्नलिखित क्रिया-पदों का वाक्यों में प्रयोग करें।
लिखतु, अगर्जत्, चरन्तु, अपतन्, अपठाम, प्रणमतु, आसन्, लेखिष्यति, अपिबः

7. निम्नलिखित धात-रूपों में जो शुद्ध हों उनपर चिह्न (✓) लगाएँ।
लेखिस्यामि—लिखिस्यामि। स्थाति—तिष्ठति। असिष्यसि—भविष्यसि। अगमत्—अगच्छत्। पातु—पिबतु । पश्यन्ति—दृशन्ति।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

12. वाक्य-रचना

संस्कृत में वाक्य बनाने के लिए यह ध्यान रखना चाहिए कि उसमें कर्ता और क्रिया जरूर रहें। कर्ता और क्रिया के बिना वाक्य अधूरा रह जाता है। फलस्वरूप, वक्ता के कहने का भाव स्पष्ट नहीं हो पाता।

अतः, किसी कर्ता का वाक्य बनाना हो तो उसके पुरुष और वचन के अनुकूल ही क्रिया-पद देना चाहिए। जैसे—कर्तृ-पद 'अश्वः' का यदि वाक्य बनाना हो तो उसमें 'धावति' या 'चरति' जैसी क्रिया लगानी चाहिए। क्योंकि 'अश्वः' अन्य पुरुष, एकवचनान्त पद है, इसलिए उसमें 'धावति' या 'चरति' जैसी अन्य पुरुष, एकवचन की क्रिया अर्थसंगत रहेगी। अनुवाद में या वाक्य बनाने में यह हमेशा खयाल रखना चाहिए कि कर्ता के पुरुष और वचन के अनुसार ही क्रिया के पुरुष और वचन होते हैं। नीचे कुछ उदाहरण दिए जाते हैं।

कर्तृ-पद	वाक्य
बालकः	बालकः पठति—लड़का पढ़ता है।
अश्वौ	अश्वौ धावतः—दो घोड़े दौड़ते हैं।
अश्वाः	अश्वाः धावन्ति—घोड़े दौड़ते हैं।
रमेशः	रमेशः खेलति—रमेश खेलता है।
सः	सः लिखति—वह लिखता है।
तौ	तौ गच्छतः—वे दोनों जाते हैं।
ते	ते गच्छन्ति—वे जाते हैं।
छात्रः	छात्रः खेलति—छात्र खेलता है।
सा	सा पुस्तकं पठति—वह पुस्तक पढ़ती है।
त्वम्	त्वम् गच्छसि—तुम जाते हो।
युवाम्	युवाम् गच्छथः—तुम दोनों जाते हो।
यूयम्	यूयम् गच्छथ—तुमलोग जाते हो।
अहम्	अहम् लिखामि—मैं लिखता हूँ।
आवाम्	आवाम् लिखावः—हम दोनों लिखते हैं।
वयम्	वयम् लिखामः—हमलोग लिखते हैं।
कुक्कुरः	कुक्कुरः धावति—कुत्ता दौड़ता है।
धेनुः	धेनुः घासं चरति—गाय घास चरती है।
गजः	गजः गच्छति—हाथी जाता है।
भ्रमराः	भ्रमराः गुञ्जन्ति—भौंरे गूँजते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्तृ-पद	वाक्य
कमलम्	कमलं विकसति—कमल खिलता है।
गृहम्	मम गृहम् अस्ति—मेरा घर है।
भारतवर्षम्	अस्माकं देशः भारतवर्षम् अस्ति—हमारा देश भारतवर्ष है।
बिहारः	अस्माकं राज्यं बिहारः अस्ति—हमारा राज्य बिहार है।
पाटलिपुत्रम्	पाटलिपुत्रं राजधानी अस्ति—पटना राजधानी है।
गंगानदी	गंगानदी वहति—गंगा नदी बहती है।

यदि किसी क्रिया का वाक्य बनाना हो, तो क्रिया के पुरुष और वचन के अनुसार कर्तृ-पद का प्रयोग करना चाहिए, जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है। उदाहरणार्थ—यदि 'गच्छति' क्रिया का वाक्य बनाना हो तो उसमें 'बालकः' या 'छात्रः' जैसा कोई अर्थसंगत कर्तृ-पद देना चाहिए। इसी तरह, मध्यम पुरुष की क्रिया में मध्यम पुरुष का और उत्तम पुरुष की क्रिया में उत्तम पुरुष का, क्रिया के वचन के अनुकूल कर्तृ-पद देना चाहिए। यथा—

क्रिया	वाक्य
हसति	बालकः हसति—लड़का हँसता है।
भवति	वृष्टिः भवति—वर्षा होती है।
वदतः	बालकौ वदतः—दो लड़के बोलते हैं।
वदन्ति	बालकाः सत्यं वदन्ति—लड़के सच बोलते हैं।
खेलसि	त्वम् खेलसि—तुम खेलते हो।
खेलथः	युवाम् खेलथः—तुम दोनों खेलते हो।
खेलथ	यूयम् खेलथ—तुमलोग खेलते हो।
गच्छसि	त्वम् गृहं गच्छसि—तुम घर जाते हो।
खादामि	अहं खादामि—मैं खाता हूँ।
खादावः	आवां खादावः—हम दोनों खाते हैं।
खादामः	वयम् खादामः—हमलोग खाते हैं।
वसति	श्यामः ग्रामे वसति—श्याम गाँव में बसता है।
गमिष्यति	स पाटलिपुत्रं गमिष्यति—वह पटना जाएगा।
पश्यसि	त्वं किं पश्यसि—तुम क्या देखते हो?
पश्यामि	अहं चन्द्रं पश्यामि—मैं चन्द्रमा देखता हूँ।

कर्म, करण आदि कारक के पदों का यदि वाक्य बनाना हो तो उसमें कर्ता और तदनुकूल क्रिया भी देनी चाहिए। यथा—

पद	वाक्य
रोटिकाम्	मोहनः रोटिकां खादति—मोहन रोटी खाता है।
लगुडेन	बालकः लगुडेन ताडयति—लड़का डंडे से पीटता है।
दरिद्राय	राजा दरिद्राय धनं यच्छति—राजा दरिद्र को धन देता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पद	वाक्य
गृहात्	रमेशः गृहात् आगच्छति—रमेश घर से आता है।
रमेन्द्रस्य	रमेन्द्रस्य अश्वः धावति—रमेन्द्र का घोड़ा दौड़ता है।
विद्यालये	सुरेशः विद्यालये पठति—सुरेश विद्यालय में पढ़ता है।
कुत्र	त्वम् कुत्र पठसि—तुम कहाँ पढ़ते हो?
अत्र	अत्र छागाः चरन्ति—यहाँ बकरे चरते हैं।
जलम्	जलम् निर्मलम् अस्ति—पानी स्वच्छ है।
नदी	नदी वहति—नदी बहती है।
तत्र	तत्र किम् अस्ति—वहाँ क्या है?
तडागे	तडागे कमलानि विकसन्ति—तालाब में कमल खिलते हैं।
भवान्	भवान् कुत्र गच्छति—आप कहाँ जाते हैं?

—— अभ्यास ——

1. निम्नलिखित पदों का वाक्यों में प्रयोग करें।
   ग्रन्थम्, पुस्तकालये, रामस्य, यूयम्, अजा, मम, क्षेत्रे, कलमेन
2. निम्नलिखित क्रिया-पदों का वाक्यों में प्रयोग करें।
   पठामः, गमिष्यति, खादावः, वसन्ति, लिखसि, आगच्छति, पठ
3. निम्नलिखित वाक्यों में जो शुद्ध वाक्य हों उनपर चिह्न (✓) लगाएँ।
   अहम् लिखति—अहम् लिखामि।
   बालकौ गृहं गच्छतः—बालकौ गृहं गच्छन्ति।
   त्वम् कि पठति—त्वम् किं पठसि?
   कुक्कुरः धावन्ति—कुक्कुराः धावन्ति।
   अजा घासः चरन्ति—अजाः घासं चरन्ति।
   कमलानि विकसति—कमलं विकसति।
   नद्याः वेगः वहति—नद्यः वेगेन बहन्ति।

नोट—विभिन्न ढंग के वाक्य के लिए या अनुवाद बनाने के लिए मोटे तौर पर इस नियम को हमेशा याद रखना चाहिए कि 'कर्ता के पुरुष और वचन के अनुसार ही क्रिया के पुरुष और वचन होते हैं'। इसके साथ ही, कर्म आदि कारकों पर भी ध्यान रखना चाहिए। उदाहरणार्थ, 'अहम् लिखति' और 'अहम् लिखामि' में 'अहम् लिखति' गलत है; क्योंकि कर्ता 'अहम्' उत्तम पुरुष, एकवचन का है, इसलिए उसकी क्रिया भी उत्तम पुरुष, एकवचन की, अर्थात् 'लिखामि' होनी चाहिए न कि 'लिखति'। 'लिखति' क्रिया अन्य पुरुष, एकवचन है, इसलिए उसका मेल उत्तम पुरुष के कर्ता 'अहम्' के साथ नहीं बैठ सकता। इसी तरह, अन्य वाक्यों की जाँच करनी चाहिए।

4. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से किसी एक युक्तिसंगत शब्द के द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति करें—
   पिता .... सह गच्छति (पुत्रेण, पुत्रस्य)। स .... आगच्छति (गृहात्, गृहेण)। रमेशः शोभनं .... अकरोत् (कार्यः, कार्य)। कृषकः .... अन्नं ददाति (दरिद्राय, दरिद्रं)। विद्यालये .... पठन्ति (छात्रः, छात्राः)। वयम् गृहं .... (गच्छामि,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गच्छाम:)। मन्दिरे .... रामायणं पठसि (त्वम्, स:)। सुरेशस्य ....न धावन्ति (अश्व:, अश्वा:)। वने .... गर्जत: (सिंहौ, सिंहा:)।

5. निम्नलिखित स्तम्भों के कर्ता-पद के साथ एक-एक क्रिया-पद का उचित मेल बैठाएँ।

कर्ता	क्रिया	कर्ता	क्रिया
वृषभा:	चरति	गौ:	चरन्ति
बालकौ	गच्छाव:	आवाम्	खेलत:
यूयम्	लिखसि	त्वम्	पठथ
फलम्	सन्ति	पत्राणि	पतति

6. निम्नलिखित वाक्यों में जो शुद्ध हों उनपर चिह्न (✓) लगाएँ।
इदं पुष्प: अस्ति—इदं पुष्पम् अस्ति। सा बालिका पर्ठति—स बालिका पठसि। तडागे मत्स्या: अस्ति—तडागे मत्स्या: सन्ति। त्वम् पत्रं लिखसि—त्वम् पत्रं लिखति। अहं सत्यं वदति—अहं सत्यं वदामि। स: पुस्तकं न अपठत्—स: पुस्तक: न अपठत्—स: पुस्तक: न अपठम्। वृक्षात् फलं पतति—वृक्षेण फलं पतन्ति।

7. निम्नलिखित स्तम्भों में कर्ता के एक-एक पद से क्रिया के उचित पदों का मेल बैठाएँ।

कर्ता	क्रिया	कर्ता	क्रिया
युवाम्	लिखति	अश्वौ	धावाम:
बालिका	गच्छामि	बालका:	धावत:
अहम्	पठथ:	वयम्	पठन्ति

8. कोष्ठक में दिए गए शब्दों से उचित शब्द के द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति करें—

.... पत्रं लिखामि।	(अहं, वयम्)
बालका: .... गच्छन्ति।	(गृह:, गृहम्)
.... किं पठथ।	(त्वं, यूयम्)
वने .... सन्ति।	(मृग:, मृगा:)
दिनेशस्य .... न लिखन्ति।	(पुत्र:, पुत्रा:)
विद्यालये .... न खेलाव:।	(आवाम्, तौ)

9. निम्नलिखित पदों का वाक्यों में प्रयोग करें।
मुने:, तस्मिन्, लतायाम्, नद्या:, अस्य, के, पितु:

10. निम्नलिखित क्रिया-पदों का वाक्यों में प्रयोग करें।
स्थास्यति, अयच्छत्, द्रक्ष्यति, सन्ति, कुर्वन्ति, खेलन्तु

11. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कर लिखें।
अहं दुग्ध न पिबिस्यामि। ते कुत्र गच्छथ। अहं वेदं न अपठत्। साधुस्य आश्रमे क: अस्ति। सर्वा: जना: गृहं अगच्छन्। ममस्य पुस्तकं कुत्र अस्ति। अयम् पक्वा: फलानि सन्ति। राम: गृहं गच्छ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

13. निमित्तार्थक 'तुमुन्' प्रत्यय

निमित्त (के लिए) के अर्थ में धातु के आगे 'तुमुन्' (तुम्) प्रत्यय होता है। जैसे—गम् + तुमुन् = गन्तुम् (जाने के लिए)। नीचे कुछ 'तुमुन्' प्रत्ययान्त पद दिए गए हैं।

गन्तुम्—जाने के लिए
पठितुम्—पढ़ने के लिए
द्रष्टुम्—देखने के लिए
हसितुम्—हँसने के लिए
गातुम्—गाने के लिए
दातुम्—देने के लिए
पातुम्—पीने के लिए
स्थातुम्—ठहरने के लिए
घ्रातुम्—सूँघने के लिए
नेतुम्—ले जाने के लिए
आगन्तुम्—आने के लिए
कर्तुम्—करने के लिए
हन्तुम्—मारने के लिए
रोदितुम्—रोने के लिए
लेखितुम्—लिखने के लिए
श्रोतुम्—सुनने के लिए
खादितुम्—खाने के लिए
वक्तुम्—कहने के लिए
शयितुम्—सोने के लिए
आनेतुम्—लाने के लिए

अनुवाद

वह दूध पीना नहीं चाहता है—स दुग्धं पातुं न इच्छति।
रमेश भात खाने जाता है—रमेशः भक्तं खादितुं गच्छति।
लोंग कथा सुनने आते हैं—जनाः कथां श्रोतुम् आगच्छन्ति।
तुम पानी देखने जाते हो—त्वम् जलं द्रष्टुं गच्छसि।
वह किताब लाने घर गया—स पुस्तकम् आनेतुं गृहम् अगच्छत्।
मैं पढ़ने नहीं जाऊँगा—अहं पठितुं न गमिष्यामि।

अभ्यास

शब्द-संकेत—

बच्चा—शिशुः। रुपया—रूप्यकं। रामायण—रामायणम्।

1. संस्कृत में अनुवाद करें—
श्याम पढ़ने के लिए जाता है। मोहन खाने के लिए नहीं जाता है। बच्चा दूध पीने के लिए दौड़ता है। रमेश रुपया लाने नहीं गया। वह क्या खाना चाहता है? सुरेश सोने के लिए आता है। वह पढ़ने के लिए जाता है। मैं तमाशा देखने जाऊँगा। क्या तुम रामायण पढ़ने जाते हो?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

14. असमापिका क्रिया

क्त्वा और ल्यप् प्रत्यय

असमापिका क्रिया (जाकर, खाकर, पढ़कर इत्यादि के अर्थ) में धातु के आगे 'क्त्वा' (त्वा) और उपसर्गयुक्त धातु के आगे 'ल्यप्' (य) ये दो प्रत्यय लगते हैं। जैसे—गम् + क्त्वा = गत्वा (जाकर); आ + गम् + ल्यप् = आगत्य (आकर)।

नीचे इन दोनों के कुछ रूप दिए जा रहे हैं।

क्त्वा (त्वा) प्रत्यय—

पीत्वा—पीकर
पठित्वा—पढ़कर
दृष्ट्वा—देखकर
श्रुत्वा—सुनकर
कृत्वा—करके
लिखित्वा—लिखकर
खादित्वा—खाकर
हत्वा—मारकर
उक्त्वा—कहकर
स्थित्वा—ठहरकर

ल्यप् (य) प्रत्यय—

आगत्य—आकर
आनीय—लाकर
उपविश्य—बैठकर
प्रणम्य—प्रणाम कर
निर्गत्य—निकलकर
विक्रीय—बेचकर

अनुवाद

मैं घर जाकर खाऊँगा—अहं गृहं गत्वा खादिष्यामि।
लड़के पढ़कर घर जाते हैं—बालकाः पठित्वा गृहं गच्छन्ति।
रमा बैठकर पढ़ती है—रमा उपविश्य पठति।
बच्चा चन्द्रमा को देखकर हँसता है—बालः चन्द्रं दृष्ट्वा हसति।
वह पुस्तक लाकर पढ़ती है—सा पुस्तकम् आनीय पठति।
वे खाकर नहीं खेलते हैं—ते खादित्वा न खेलन्ति।

अभ्यास

1. संस्कृत में अनुवाद करें—
मैं विद्यालय जाकर पढूँगा। वह देवता को (देवं) प्रणाम कर घर जाता है। क्या तुम पढ़कर आओगे? वह उपदेश (उपदेशं) सुनकर आता है। लड़के खाकर स्कूल (विद्यालयं) जाते हैं। सुरेश बैठकर नहीं पढ़ेगा। वे दूध पीकर खेलते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

15. भूतकालिक 'स्म' अव्यय

भूतकाल के अर्थ में लङ् लकार के अतिरिक्त एक 'स्म' अव्यय भी लगता है। किन्तु यह केवल वर्तमानकाल में लट् लकार के अन्य (प्रथम) पुरुष के तीनों वचनों में लगता है। मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष में 'स्म' का प्रयोग नहीं होता। जैसे—

एकवचन—गच्छति स्म—गया
द्विवचन—गच्छतः स्म—दो गए
बहुवचन—गच्छन्तिस्म—(कई) गए

अनुवाद

अशोक ने पुस्तक पढ़ी—अशोकः पुस्तकं पठति स्म।
भोज राजा हुआ—भोजः राजा भवति स्म।
लड़के घर गए—बालकाः गृहं गच्छन्ति स्म।
दो लड़कों ने भात खाया—बालकौ भक्तं खादतः स्म।
कृष्ण ने कंस को मारा—कृष्णः कंसं हन्ति स्म।
उसने सच कहा—स सत्यं कथयति स्म।

अभ्यास

1. संस्कृत में अनुवाद करें—
   रमेश ने रामायण पढ़ी। वह घर गया। राम राजा हुआ। छात्र विद्यालय गए। राम ने रावण को मारा। उसने पत्र लिखा। कौशल ने असत्य (असत्यं) कहा।
2. निम्नलिखित क्रियाओं में 'स्म' लगाकर वाक्य बनाएँ।
   पिबति, धावतः, पठन्ति, गायति, कुर्वन्ति, यच्छति, पतति, चरन्ति
3. निम्नलिखित पदों का अलग-अलग वाक्यों में प्रयोग करें।
   सा, मम, त्वम्, यूयम्, छात्रौ, ते, पुष्पं, अद्य, अश्वाः, शिशवः, मुनेः, आवाम्, नद्यः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ट 1. संस्कृत में कुछ अनुच्छेद

संस्कृत के छात्रों को आरंभ से ही संस्कृत में वाक्य-रचना का अभ्यास करना चाहिए। गो, अश्व, गृह आदि विषयों पर संस्कृत में दो चार छोटे-छोटे वाक्य लिखने का अभ्यास करना आवश्यक है। इस तरह के नियमित अभ्यास से किसी भी विषय पर संस्कृत में लिखने की क्षमता बढ़ती ही जाएगी। नीचे ऐसे कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं।

गौः

पशुषु गौः मातृवत् पूज्यते। इयम् तृणं चरति। अस्याः मूत्रं पवित्रं तथा अनेक रोगनाशकम् भवति। गौः मधुरं दुग्धं ददाति। अस्याः गोमयं (गोबर) उर्वरक-रूपेण (खाद के रूप में) क्षेत्रे प्रयुज्यते।

अश्वः

अश्वः तीव्रगामी पशुः। अयं तृणं चणकादिकम् (चना आदि) च खादति। अश्वः राजमार्गे (सड़क पर) वेगेन धावति। अयं रथं शकटं (गाड़ी) च कर्षति। पृष्ठे भारं (बोझा) अपि वहति।

कुक्कुरः

कुक्कुरः निष्ठावान् (बफादार) जन्तुः अस्ति। अयं मांसं भक्षयति। अन्नादिकं अपि खादति। कुक्कुरः चौरं दृष्ट्वा उच्चैः स्वरेण बुक्कति (भूँकता है)। प्रशिक्षिताः कुक्कुराः चौरं शीघ्रं अन्वेषयन्ति।

मार्जारः (बिलाड़)

मार्जारः प्रतिगृहं (हर घर में) दृश्यते। अयं अन्नं, दुग्धं, मांसं च भक्षयति। अयं अंधकारेऽपि मूषिकस्य आखेटं (शिकार) करोति। मार्जारस्य मुखं व्याघ्रवत् भवति। मार्जारः कुक्कुरं अवलोक्य (देखकर) पलायते।

भारतवर्षम्

अस्माकं देशः भारतवर्षम् अस्ति। अयम् विशालतमः देशः अस्ति। भारतस्य राजधानी दिल्ली अस्ति। अस्य राष्ट्रभाषा हिन्दी वर्तते। अस्मिन् देशे बहवः विद्वांसः अभवन्। अत्र गङ्गा-सरयू-यमुना प्रभृतयः नद्यः प्रवहन्ति।

गङ्गा

नदीषु गङ्गा श्रेष्ठा। अस्याः जलं पवित्रं भवति। इयम् हिमालयात् निर्गच्छति। अस्याः तटे बहूनि नगराणि सन्ति। भगीरथः गङ्गां पृथिव्यां अनीतवान् इति श्रूयते।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गृहम्

अस्माकं गृहं इष्टिका-निर्मितं अस्ति। गृहे पञ्च प्रकोष्ठाः सन्ति। मम गृहस्य अग्रे एका पुष्प-वाटिका वर्तते। मम गृहे एका अजा तथा एका गौः स्तः। मम पिता अध्यापकः अस्ति। भ्राता महाविद्यालये पठति।

मम विद्यालयः

मम विद्यालयः नद्याः तटे अवस्थितः। तस्मिन् सप्त शिक्षकाः सन्ति। द्विशतं छात्राः पठन्ति। विद्यालयस्य समीपे एकं क्रीडाक्षेत्रं (खेल का मैदान) अस्ति। विद्यालये पारितोषिक-वितरणं अपि भवति।

काकः (कौआ)

काकः पक्षिषु चतुरः भवति। अयम् कृष्णवर्णः (काले रंग का) भवति। काकः अन्नं मांसं च भक्षयति। अयं शिशोः हस्तात् रोटिकां आच्छिद्य (छीनकर) उड्डीयते (उड़ जाता है)। अस्य रवः (बोली) कटुः (कड़वी) भवति।

अजा (बकरी)

अजा तृणं चरति। इयम् अर्कादिकम् (अकवन आदि) अपि भक्षयति। अस्याः दुग्धं सुपाच्यं (शीघ्र पचनेवाला) पुष्टिकरं च भवति। निर्धनानाम् कृते (गरीबों के लिए) अजापालनं जीविकायाः प्रधानं साधनं अस्ति। अस्य चर्मणः (चमड़े का) अपि उपयोगः भवति।

गजः (हाथी)

गजः स्थूलकायः (विशाल शरीरवाला) पशुः। अयं वृक्षस्य शाखा-पत्राणि (डाल और पत्ते) मोदकं च खादति। अस्य वर्णः कृष्णः भवति। गजः शुण्डेन जलं पिबति। अयं कर्दमे (कीचड़ में) अपि चलति।

आम्रम् (आम)

फलेषु आम्रं श्रेष्ठं विद्यते। आम्रं रसपूर्णं मधुरं फलं भवति। इदं तृप्तिकारकं पौष्टिकं च भवति। अस्य रसेन आम्रातकं (अमावट) निर्मीयते (बनाया जाता है)।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ट 2. अनुवाद के लिए कुछ संस्कृत गद्यांश

(1)

श्यामा पठति। त्वम् किं करोषि? कुक्कुरः धावति। अहम् लिखामि। स न पठति। तौ धावतः। ते किं कुर्वन्ति? युवाम् गच्छथः। तत्र कः अस्ति? आवाम् न गच्छावः। यूयम् हसथ। वयम् न खेलामः। अश्वाः धावन्ति।

(2)

रमेशः पुस्तकं पठति। राधा रोटिकां खादति। गौः तृणं चरति। बालकाः आम्रं खादन्ति। बालकौ चन्द्रं पश्यतः। छात्रः स्वपाठं स्मरति। अहम् पत्रिकां पठामि। ते पत्रिकां न पठन्ति। स गृहं गच्छति। वयम् सत्यं वदामः।

(3)

छात्रः कलमेन लिखति। बालकाः दण्डेन कुक्कुरं ताडयन्ति (पीटते हैं)। छात्राः विद्यालयं अगच्छन्। दशरथः राजा आसीत्। बालकाः कन्दुकेन खेलन्ति। अहम् ह्यः पाटलिपुत्रं अगच्छम्। भवान् कुत्र गच्छति? किं त्वम् आम्रं अखादः। राजा यज्ञं करोतिस्म। स गृहं गतवान्।

(4)

छात्राय पुस्तकं देहि। कृषकः भिक्षुकेभ्यः अन्नं ददाति। वृक्षात् फलं पतति। हिमालयात् गङ्गा निस्सरति। अशोकस्य पिता कः आसीत्? तव किं नाम? मम पुस्तकं तत्र न अस्ति। तस्य कूपस्य जलं स्वच्छं न अस्ति। कस्य पार्श्वे (पास में) रुप्यकानि सन्ति।

(5)

विद्यालये छात्राः पठन्ति। आकाशे मेघाः गर्जन्ति। अस्मिन् ग्रामे कति जनाः वसन्ति। कूपे मण्डूकाः (मेढ़क) 'टर्र-टर्र' इति शब्दं कुर्वन्ति। तस्यां पाठशालायां पञ्च अध्यापिकाः अध्यापयन्ति। कस्मिन् ग्रामे चिकित्सकः न विद्यते? वयम् बिहारराज्ये निवसामः। क्षेत्रे अजाः चरन्ति।

(6)

त्वम् सत्यं वद। किम् अहम् रामायणं पठानि? छात्राः स्वकीयं पाठं पठन्तु। रमेशः च सुरेशः च गृहं गच्छताम्। चन्द्रशेखरः कदा पाटलिपुत्रं गमिस्यति? त्वया सह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अहम् अपि गृहं चलिष्यामि। शिक्षकः कक्षायां भूगोलं पाठयति। नद्यः स्वजलं न पिबन्ति।

(7)

शरणार्थी कुत्र वत्स्यति (बसेगा)? फलिनः वृक्षाः नमन्ति। ते जनाः जलं पास्यन्ति। वृक्षात् पत्राणि पतन्ति। इमानि फलानि सुन्दराणि सन्ति। त्वं पक्वं फलं खाद। असत्यं मा वद। सर्वस्य हितं कुरु। अप्रियं वचनं न बदन्तु। सर्वे सुखिनः सन्तु।

(8)

ते कथां श्रोतुं गच्छन्तिस्म। रमेशः गृहं गन्तुं उद्यतः। प्रदीपः रामायणं पठितवान्। बालकाः विद्यालयं गतवन्तः। शिशुः शयितुम् क्रन्दति। सा कथां श्रुत्वा आगतवती। बालः चन्द्रं दृष्ट्वा प्रसन्नः भवति। भवेशः सर्वं कार्यं कृतवान्। स गातुं न समर्थः। सर्वे मनसा (मन से) पठन्तु।

(9)

अस्माकं देशः भारतम् अस्ति। भारते बहवः विद्वांसः अभवन्। अस्मिन् देशे बहवः नद्यः प्रवहन्ति। अत्र अनेके महापुरुषाः अभवन्। अस्मिन् देशे वशिष्ठ-विश्वामित्र-वाल्मीकि-अत्रि प्रभृतयः बहवः ऋषयः उत्पन्नाः। भारतस्य प्राचीनतमा भाषा संस्कृतं अस्ति।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ट 3. अनुवाद के लिए कुछ हिन्दी गद्यांश

(1)

राम पुस्तक पढ़ता है। लड़के दौड़ते हैं। सीता दूध (दुग्धं) पीती है। तुम दोनों खेलते हो। मैं हँसता हूँ। मेघ बरसता है। वन में बाघ गरजता है। बुढ़िया (वृद्धा) रोती है। दो लड़के आते हैं (आगच्छत:)। मच्छर (मशका:) काटते हैं (दशन्ति)।

(2)

राजा रक्षा करे (रक्षतु)। वह यहाँ (अत्र) बैठे। तुम रामायण पढ़ो (पठ)। लड़के खेलें (खेलन्तु)। मैं क्या रटूँ (रटानि)। तुम दोनों घर जाओ (गच्छतम्)। जल्दी (शीघ्रं) काम करो (कुरु)। गाय घास (तृणं) चरे। वे दोनों पानी पिएँ (पिबताम्)।

(3)

वह घर गया (अगच्छत्)। मैंने पुस्तक पढ़ी (अपठम्)। जंगल में बाघ गरजा (अगर्जत्)। राधा कल (ह्य:) रोई थी (अक्रन्दत्)। उसने (स:) दूध पीया। दशरथ एक राजा थे (आसीत्)। तुमलोगों ने चन्द्रमा देखा (अपश्यत)।

(4)

मैं स्कूल जाऊँगा (गमिष्यामि)। वह तमाशा (कौतुकम्) देखेगा (द्रक्ष्यति)। राम कलम से लिखेगा (लेखिष्यति)। क्या (किं) तुम महाभारत पढ़ोगे (पठिष्यसि)? वह अन्न देगा (दास्यति)। हमलोग काम (कार्यं) करेंगे (करिष्याम:)।

(5)

वह छात्र को (छात्राय) पुस्तक देता है। राजा ब्राह्मण को अन्न (अन्नं) देगा। हिमालय से (हिमालयात्) गंगा निकलती है (नि:सरति)। मैं विद्यालय से (विद्यालयात्) आता हूँ (आगच्छामि)। पेड़ से पत्ते (पत्राणि) गिरते हैं। वह राम का (रामस्य) लड़का है। यह (इदं) तुम्हारी (तव) पुस्तक है।

(6)

स्कूल में (विद्यालये) लड़के पढ़ते हैं। वह छात्रों में (छात्रेषु) मिठाई बाँटता है (वितरति)। तालाब में (तडागे) कमल (कमलानि) हैं। आप (भवान्) कहाँ (कुत्र) पढ़ते हैं? लड़की (बालिका) घर जाएगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(7)

राधा घर जाती है। मैदान में घोड़े दौड़ते हैं। हाथी धीरे-धीरे (शनैः शनैः) आता है। रमेश रामायण पढ़ेगा। तुम्हारा क्या नाम है? शाम (सायं) में लड़के खेलते हैं।

(8)

खेत में बकरियाँ चरती हैं। वह कल (श्वः) मुंगेर जाएगा। मैं दूध पीता हूँ। सुबह (प्रातः) में घूमना चाहिए। कृष्ण वसुदेव के पुत्र थे। विद्यालय में लड़कियाँ पढ़ती हैं। तुम कहाँ पढ़ते हो? रमेश यहाँ पढ़ेगा।

(9)

तुम कहाँ (कुत्र) जाते हो? राम के साथ (सह) सीता वन गई। मैं षष्ठ वर्ग में पढ़ता हूँ। कृष्ण ने कंस को मारा (हन्तिस्म)। वह संस्कृत पढ़ेगा। दो छात्र महाभारत पढ़ते हैं।

(10)

तीन (त्रयः) घोड़े मैदान में दौड़ते हैं। मैं आम खाता हूँ। रमेश कल (ह्यः) घर गया। तुम क्या (किम्) पढ़ते हो? राधा मुंगेर जाएगी। वह बाघ को (व्याघ्रम्) मारता है। लड़के पढ़कर घर जाते हैं।

(11)

राजा निर्धन को (निर्धनाय) धन देता है। तुम यहीं (अत्रैव) पढ़ो (पठ)। राम दशरथ के पुत्र थे। वे घर जाएँ (गच्छन्तु)। तुमलोग कल (श्वः) कहाँ जाओगे (गमिष्यथ)। वह पिता के साथ (पित्रा सह) घर गया।

(12)

विद्यालय में बहुत से (बहवः) छात्र हैं। राम वन गए। आकाश में बादल (मेघाः) गरजते हैं (गर्जन्ति)। मैं घर जाऊँ (गच्छानि)। वे खाकर (खादित्वा) टहलते हैं (भ्रमन्ति)। अशोक के साथ (अशोकेन सह) अजय घर जाता है।

(13)

तुम दोनों कहाँ (कुत्र) जाते हो? लड़के पढ़ने के लिए (पठितुम्) विद्यालय जाते हैं। मोहन की गाय चरती है। सड़क पर (राजमार्गे) घोड़े तेजी से (वेगेन) दौड़ते हैं। लड़के दुग्ध पीते हैं। रमेश पटना (पाटलिपुत्रं) गया। हम दोनों घर जाते हैं।

(14)

यह आम का पका (पक्वम्) फल है। राधा पत्र लिखती है। विद्यालय में शिक्षक हैं। क्या (किम्) तुमलोग संस्कृत पढ़ते हो? घर में राम का चित्र (चित्रम्) है। फुलवारी में (पुष्पवाटिकायाम्) फूल खिलते हैं (विकसन्ति)। सदा सत्य बोलो (वद)।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ट 4. शब्दकोश

खाद्यपदार्थ

भात = भक्तम्
दाल = द्विदलम्
रोटी = रोटिका
तरकारी = व्यञ्जनम्
पूड़ी = शष्कुली
सत्तू = सक्तुः
भूजा = भृष्टान्नम्
चूड़ा = चिपटान्नम्
साग = शाकः
चावल = तण्डुलः
मिठाई = मिष्टान्नम्
लड्डू = मोदकम्
जलेबी = कुण्डलिनी
खीर = पायसम्
दही = दधि, ओदनम्
दूध = दुग्धम्
घी = घृतम्
मट्ठा = तक्रम्
आम = आम्रम्
नीबू = निम्बूकम्
जामुन = जम्बूफलम्
बेल = श्रीफलम्
केला = कदलीफलम्
कटहल = पनसम्
महुआ = मधूकम्
नारियल = नारिकेलम्
चीनी = सिता
गुड़ = गुडः

ग्रामादि

गाँव = ग्रामः
देश = देशः
शहर = नगरम्
राजधानी = राजधानी
पुस्तकालय = पुस्तकालयः
स्कूल = विद्यालयः
बगीचा = उद्यानम्
किला = दुर्गम्
घर = गृहम्
महल = सौधः, प्रासादः
आश्रम = आश्रमः
मंदिर = मंदिरम्
रसोईघर = पाकशाला
अस्पताल = चिकित्सालयः
झोपड़ी = पर्णशाला
बाजार = आपणः, पण्यवीथिका

पशु-पक्षी-जीव-जन्तु

जानवर = पशुः
गाय = गौः, धेनुः
बैल = वृषभः
भैंस = महिषी
भैंसा = महिषः
बछड़ा = वत्सः
शेर = सिंहः
बाघ = व्याघ्रः
बन्दर = वानरः, कपिः
कुत्ता = कुक्कुरः
बिलाड़ = मार्जारः
खरहा = शशकः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घोड़ा = अश्वः, घोटकः
घोड़ी = अश्वा, वडवा
बकरा = छागः, अजः
बकरी = अजा
भेड़ = मेषी, भेड़ा = मेषः
हरिण = हरिणः, मृगः
गीदड़ = जम्बुकः, शृगालः
भालू = ऋक्षः, भल्लूकः
हाथी = गजः
साँढ़ = गोपतिः, षण्डः
गधा = खरः, गर्दभः
चूहा = मूषिकः
साँप = सर्पः, नागः
कछुआ = कच्छपः
मेढक = मण्डूकः
घोंसला = नीडः, कुलायः
सींग = शृंगम्
पूँछ = पुच्छम्
सूअर = शूकरः
नेवला = नकुलः
चिड़िया = खगः, पक्षी
सुग्गा = शुकः
मैना = सारिका
कौआ = काकः
मोर = मयूरः
मुर्गा = कुक्कुटः
बगुला = बकः
उल्लू = उलूकः
गिद्ध = गृध्रः
कीड़ा = कीटः
मक्खी = मक्षिका
चींटी = पिपीलिका
खटमल = खट्वामलः, मत्कुणः
मच्छर = मशकः
पंख = पक्षः
चोंच = चञ्चुः

जलादि

पानी = जलम्, पानीयम्
मेघ = मेघः
विद्युत् = चपला
आसमान = आकाशः
धरती = धरा
खेत = क्षेत्रम्
फसल = शस्यम्
हवा = पवनः, वायुः
आँधी = वात्या
पाला = तुषारः
सूर्य = सूर्यः
चन्द्रमा = चन्द्रः
मैदान = क्रीडाक्षेत्रम्
घास = तृणम्, घासः
समुद्र = सागरः, समुद्रः
नदी = नदी, सरिता
लहर = तरंगः
बाढ़ = परीवाहः, जलौघः
कीचड़ = कर्दमः, पङ्कः
पोखर = पुष्करः, तडागः
कुआँ = कूपः
तालाब = तडागः
झरना = निर्झरः
किनारा = तटम्, कूलम्
दिन = दिनम्, दिवसः
रात = रात्रिः, नक्तं
अँधेरा = अन्धकारः
रोशनी = प्रकाशः

सम्बन्धी

पिता = जनकः, पिता
माता = माता, जननी
भाई = भ्राता
मामा = मातुलः
मामी = मातुलानी
भानजा = भागिनेयः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बहन = भगिनी
बेटी = पुत्री, कन्या
बेटा = पुत्रः, सुतः
पति = पतिः, स्वामी
पत्नी = पत्नी, भार्या
ससुर = श्वशुरः
सास = श्वश्रूः
साला = श्यालः
दामाद = जामाता
चाचा = पितृव्यः
चाची = पितृव्या
दादा = पितामहः
दादी = पितामही
पोता = पौत्रः
पतोहू = पुत्रवधूः
भतीजा = भ्रातृजः
देवर = देवरः
मित्र = मित्रं, सुहृद्

विशेषण

उजला = श्वेतः
गोरा = गौरः
काला = कृष्णः
हरा = हरितः
लाल = रक्तः
पीला = पीतः
अच्छा = शोभनः, उत्तमः
बुरा = कुत्सितः, निन्द्यः
ठग = वञ्चकः
बदमाश = दुष्टः
मूर्ख = मूर्खः, अज्ञः
विद्वान् = पण्डितः
अन्धा = अन्धः
लँगड़ा = खञ्जः
गूँगा = मूकः
बहरा = बधिरः
बच्चा = बालकः, वत्सः
जवान = युवकः, तरुणः
बूढ़ा = वृद्धः, बूढ़ी = वृद्धा
पागल = उन्मत्तः
कंजूस = कृपणः
थका = श्रान्तः
भरा = पूर्णः
खाली = रिक्तः
लम्बा = लम्बकायः
नाटा = खर्वः
मोटा = स्थूलः
दुर्बल = दुर्बलः, कृशः
रोगी = रुग्णः, रोगी
तन्दुरुस्त = स्वस्थः
सुन्दर = सुन्दरः, रमणीयः
मशहूर = प्रसिद्धः
बहादुर = वीरः
बड़ा = श्रेष्ठः
छोटा = लघुः, नीचः
नया = नवीनः
पुरान = पुराणः
थोड़ा = अल्पः
बहुत = बहु, अधिकम्
गरीब = निर्धनः
अमीर = धनिकः
सूखा = शुष्कः
गीला = आर्द्रः
कच्चा = अपक्वः
पका = पक्वः
कड़ुआ = कटुः
मीठा = मिष्टः
तीता = तिक्तः

प्रकीर्ण

कुम्हार = कुम्भकारः
लोहार = लौहकारः
घड़ा = घटः
तलवार = कृपाणः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बढ़ई = काष्ठकार:, वर्धकि:
चमार = चर्मकार:
हजाम = नापित:
दुकानदार = आपणिक:
राजा = नृप:, राजा
चोर = चौर:
भिखारी = भिक्षुक:
किसान = कृषक:
मजदूर = श्रमिक:
हलवाहा = हलवाहक:
सिपाही = राजपुरुष:, आरक्षी
मन्त्री = सचिव:, मन्त्री
शिकारी = आखेटक:
सेनापति = सेनापति:
धोबी = रजक:
देह = देहम्, शरीरम्
मुख = मुखम्
कान = कर्ण:
आँख = नेत्रम्
जीभ = जिह्वा
दाँत = दशन:, दन्त:
हाथ = हस्त:, कर:

बाण = बाण:
छड़ी = यष्टि:
दीया = दीप:
आग = अग्नि:
किताब = पुस्तकम्
कॉपी = पुस्तिका
कलम = कलम:, लेखनी
दावात = मसिधानी
रोशनाई = मसि:
स्लेट = पट्टिका
कम्बल = कम्बलम्
कपड़ा = वस्त्रम्
धोती = धौतम्
साड़ी = शाटी
कुरता = कञ्चुकम्
पेटी = मञ्जूषा, पेटिका
चटाई = कट:
खटिया = खट्वा
खड़ाऊँ = पादुका
जूता = पादत्राणम्
छाता = छत्रम्
फुटबॉल = कन्दुक:

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस पुस्तक पर एक 3-D होलोग्रैम स्टिकर लगा है जो साधारण स्टिकरों से भिन्न है। हमारे होलोग्रैम स्टिकर की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं।

- पुस्तक को हिलाने से होलोग्रैम के भीतर की पुस्तक एवं रेखाओं में गति आती है।
- रेखाओं में अतिसूक्ष्म अक्षर अंकित हैं।
- इस होलोग्रैम में भारती भवन का एक बड़ा लोगो छिपा है, साथ ही चार पंक्तियों में BHARATI BHAWAN लिखा हुआ है। इन्हें किसी विशेष कोण पर देखा जा सकता है।

आशा है, आप होलोग्रैम देखकर भारती भवन की सही पुस्तक की पहचान कर पाएँगे।

BHARATI BHAWAN (P & D)

Sugam Sanskrit Vyakaran 1

2APA1

Rs 13.00

ISBN 81-7709-041-0

9 788177 090413 00017>

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh